बड़ी
श्री राम स्तुति

॥श्री गणेशाय नमः॥

बड़ी श्रीराम स्तुति

चारों धाम की बड़ी जय सहित

प्रकाशक :

पं. द्वारिका प्रसाद शिव गोविन्द पुस्तकालय

श्रृंगार घाट, कोतवाली के सामने, अयोध्या

मूल्य ४०/-

॥श्री गणेशाय नमः॥

प्रातःकाल की स्तुति

जय जय सुर नायक, जन सुखदायक, प्रणत पाल भगवन्ता।
गोद्विज हितकारी, जय असुरारी, सिन्धु सुता प्रिया कन्ता॥
पालन सुर धरनी, अद्भुत करनी, मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला, दीनदयाला, करउ अनुग्रह सोई॥
जय जय अबिनासी, सब घट बासी, व्यापक परमानन्दा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं, माया रहित मुकुन्दा॥
जेहि लागि बिरागी, अति अनुरागी, विगत मोह मुनिवृन्दा।
निसिबासर ध्यावहिं, गुन गन गावहिं, जयति सच्चिदानन्दा॥
जेहि श्रृष्टि उपाई, त्रिविध बनाई, संग सहाय न दूजा।
जो करउ अघारी, चिन्त हमारी, जानिय भक्ति न पूजा॥
जो भव भय भंजन, मुनि मन रंजन, गंजन विपति बरुथा।
मन बच क्रम बानी, छाँड़ि सयानी, सरन सकल सुर जूथा॥
शारद श्रुति शेषा, ऋषय अशेषा, जाको कोई नहिं जाना।
जेहि दीन पियारे, वेद पुकारे, द्रवउ सो श्री भगवाना॥
भव बारिध मन्दर, सब विधि सुन्दर, गुन मन्दिर सुख पुंजा।
मुनि सिद्ध सकलसुर, परम भयातुर, नमत नाथ पद कंजा॥
दोहा– जानि सभय सुर भूमि सुनि, बचन समेत सनेह।
गगन गिरा गम्भीर भइ, हरनि, शोक सन्देह॥

॥ सियाबर रामचन्द्र जी की जय॥

अथ् श्री रामजन्म की स्तुति

भये प्रकट कृपाला, दीन दयाला, कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी, अद्‌भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा, तनु घनश्यामा, निज आयुध भुजचारी।
भूषन बनमाला नयन विसाला, शोभा सिन्धु खरारी॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी, केहि विधि करौं अनन्ता।
माया गुन ग्याना तीत अमाना वेद पुरान भनन्ता॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर, जेहि गावहिं श्रुति सन्ता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी, प्रगट भए श्रीकान्ता॥
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना, चरित बहुत विधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई, जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा।
कीजै शिशु लीला अतिप्रिय शीला, यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना, होइ बालक सुर भूपा।
यह चरित जे गावहिं हरि पद पावहिं, ते न परहिं भवकूपा॥
दोहा– बिप्र धेनु सुर सन्त हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुन गोपार॥

सियाबर रामचन्द्र जी जय॥
अयोध्या रामलला की जय॥
पवन सुत हनुमान की जय॥

अथ् श्रीजानकीजी की स्तुति

भई प्रगट कुमारी भूमि विदारी जन हितकारी भयहारी।
अतुलित छवि धारी मुनि मन हारी, जनक दुलारी सुकुमारी॥
सुन्दर सिंहासन तेहि पर आसन कोटि हुतासन दुतिकारी।
सिर छत्र बिराजैं सखि गन भ्राजैं निज निज कारज कर धारी॥
सुर सिद्ध सुजाना हनहिं निशाना, चढ़े विमाना समुदाई।
बरसहिं बहु फूला मंगल मूला, अनुकूला सिय गुन गाई॥
देखहिं सब ठाढ़े लोचन गाढ़े, सुख बाढ़े उर अधिकाई।
अस्तुति मुनि करहीं आनन्द भरहिं, पायन परहिं हरषाई॥
ऋषि नारद आए, नाम सुनाए, सुनि सुख पाये नृप ज्ञानी।
सीता सन मुनिराई बिनै सुनाई, समय सुहाई मृदुबानी॥
लालन तनु लीजै चरित सुकीजै, यह सुख दीजै नृपरानी।
सुनि मुनिबर बानी सिय मुसुकानी, लीला ठानी सुखदाई॥
सोवत जनु जागी रोवनलागी, नृप बड़ भागी उर लाई।
दम्पत्ति अनुरागेउ प्रेम सु पागेउ यह सुख लागेउ मन लाई॥
अस्तुति सिय केरी रामा प्रेम लतेरी, बरनि कुचेरी सिर नाई।

दोहा— निज इच्छा मख, भूमि ते प्रगट भई सिय आय।
चरित किए पवन परम, बरधन मोद निकाय॥

॥जनकपुर जनकनन्दनी की जय॥

अथ् श्री कृष्ण स्तुति

भए प्रगट गोपाला दीन दयाला यशुमति के हितकारी।
हर्षित महतारी रूप निहारी मोहन मदन मुरारी॥
कंसासुर जाना मन अनुमाना पूतना बेगि पठाई।
तेहि हर्षित धाई मन मुसकाई गई जहाँ यदुराई॥
तेहि जाय उठाये हृदय लगाये पयोधर मुख में दीन्हाँ।
तब कृष्ण कन्हाई मन मुसकाई प्राण तासु हर लीन्हाँ॥
जब इन्द्र रिसाई मेघ पठाई बस कर ताहि मुरारी।
गउअन हितकारी सुरमुनि झारी नख पर गिरिबर धारी॥
कंसासुर मारेउ अति अहंकारेउ बत्सासुर संघारेउ।
बकासुर आयोउ बहुत डरायेउ ताकर बदन बिदारेउ॥
तेहि अति दीन जानी प्रभु चक्रवानी, ताहि दीन्ह निज लोका।
ब्रह्मा शिव आए अति सुख पाए, मगन भए गए शोका॥
यह छन्द अनूपा है रस रूपा जो नर याको गांवै।
तेहि सम नहिं कोई रामा त्रिभुवन सोई मनवांछित फल पावै॥

दोहा— नन्द यशोदा तप कियो, मोहन से मन लाय।
देखन चाहत बाल सुख, रहयो कछुक दिन छाय॥
जेहि नक्षत्र मोहन भए, सो नक्षत्र पड़ेउ आय।
चारु बधाई रीति सों, करत यशोदा माय॥

वृन्दावन कृष्ण बलदाउ जी की जय।
बोलो भाई सब सन्तन की जय।
अपने-अपने गुरु गोविन्द की जय।

श्रीराम वन्दना

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं, सीतासमारोपित बाम भागम्।
पाणौ महासायक चारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम्॥
भवाब्धि पोतं भरताग्रजंतं भक्ति प्रियं भानुकुल प्रदीपम्।
भूताधिनाथं भुवनाधिपत्यं, भजामि रामं भवरोग वैद्यम्॥
लोकाभिरामं रणरंग धीरं, राजीव नेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपंकरुणा करं तं, श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये॥
सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं, हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं, मया प्रामादात्प्रणयेन वापि॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देवदेव॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं सुभाङ्गम्॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्।
वन्दे विष्णुः भवभयहरणं सर्वलोकैकनाथम्॥

मनोजवं मारुततुल्य बेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम
वतात्मजं वानर यूथ मुख्यं श्री रामदूतं शरणं प्रपद्ये
अच्युतं केशवं राम नारायणं, कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम्
श्रीधरं माधवं गोपिका बल्लभं जानकी नायकं श्रीरामचन्द्रं भजे।

ध्येयं सदापरिभवघ्नमभीष्ट दोहं,
तीर्थास्पदं शिव विरञ्चि नुतं शरण्यम्।
भूत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धि पोतं,
बन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

त्याक्त्वा सुदुस्त्यज सुरेप्सित राजलक्ष्मी,
धर्मिष्ठ आर्य वचसीयद् गादरण्यम्॥
मायामृगं दयित येप्सित मन्वधावद्,
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

श्रीकनक भवन संध्या स्तुति

वन्दे विदेहतनया पदपुण्डरीकं, कैसौरसौरभसमाहृतयोगि चित्तम्।
हन्तुं त्रितापमनिशं मुनिहंस सेव्यं, सम्मानशालि परिपीत पराग पुञ्जम्॥
दूर्वादलंद्युतितनुं तरुणाब्ज नेत्रं, हेमाम्बरं बर विभूषण भूषितांगम्।
कन्दर्प कोटि कमनीय किशोर मूर्ति पूर्ति मनोरथ भव भुज जानकीशम्॥
न धर्मनिष्ठोऽपि च चात्मवेदी न भक्तिमास्त्वं चरणारविन्दे।
अकिञ्चनोऽनन्यगतिं शरण्यं, त्वत्पाद मूलं शरणं प्रपद्ये॥
श्लोक—अपराध सहस्र भाजनं पतितं, भीम भवार्ण वोदरे।
अगति शरणागतिं हरेः कृपया केवल मात्मसात्कुरु॥

॥ छन्द ॥

हे रामा! पुरुषोत्तमा! नरहरे नारायणं केशवा।
हे गोविन्दा गरुणध्वजे गुणनिधे दामोदरं माधवा॥
हे कृष्णा! कमलापते! यदुपते! सीतापते! श्रीपते।
बैकुण्ठाधिपते! चराचरपते! लक्ष्मीपते पाहिमाम्॥१॥
हे गोपालक! हे कृपाजल निधे! हे सिन्धु कन्यापते।
हे कंसात्मक! हे गजेन्द्र करुणा पारीण! हे माधवः॥
हे रामानुज! हे जगन्नय गुरो! हे पुण्डरीकाक्ष्माम्।
हे गोपी जननाथ पालनपरा जानामि न त्वां विना॥२॥

कस्तूरी तिलकं ललाट पटले, वक्षस्थले कौस्तुभम्।
नासाग्रे गज मौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्॥
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली।
गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः॥३॥
आदौ राम तपोवनादि गमन हत्वामृगा काञ्चनम्।
वैदेहीहरणं जटायु मरणं सुग्रीव संभाषणम्॥
बाली निर्दलनं समुद्र तरणं, लंकापुरी दाहनम्।
पश्चाद् रावण कुम्भकर्ण हननं एतद्धि रामायणम्॥४॥
आदौ देवकि देव गर्भ जननं गोपी गृहे बर्धनम्।
मायापूतन जीवतापहरणं गोबर्धनोद्धारणम्॥
कंसच्छेदन कौरवादिहननं कुन्तीसुताः पालनम्।
एतद् श्रीमद्भागवत पुराण कथितं श्रीकृष्ण लीलामृतम्॥५॥
श्रीरंग करिशैल मज्जन गिरौ शेषाचल सिंहाचलम्।
श्री कूर्म पुरुषोत्तमं च बद्री नारायणं नैमिषम्॥
श्रीमद्-द्वारावती प्रयाग मथुराऽयोध्या गया पुष्करम्।
शालिग्राम निवासिनो विजयते श्रीरामानन्दोऽयं मुनिः॥६॥
विष्णोः पाद अवन्तिका गुणवतीं, मध्ये च कांञ्चीपुरीम्।
नाभीं द्वारवती तथा च हृदये मायापुरी पुण्यदाम्॥
ग्रीवामूलमुदाहरन्ति मथुरा नासाग्रे वाराणसीम्।
एतद् ब्रह्म वेद वदन्ति मुनियोऽयोध्यापुरी मस्तके॥७॥
तूणेनैकशरः करेणदशधा सन्धानकाले शतम्।
चापेऽभूत सहस्र लक्षगमने कोटिश्च कोटिर्वधे॥
अन्तेचार्ब निखर्ब बाण बिबिधौ सीतापते शोभितम्।

एतद् बाण पराक्रमस्य महिमा सत्पात्रदानेयथा ॥८॥
पार्थाय प्रतिबोधितं भगवता नारायणन स्वयं।
व्यासेन ग्रथितां पुराणमुनिना मध्येमहाभारतम्॥
अद्वैतामृतवर्षिणीं भगवतीमष्टादशाध्यायिनी-
मम्बत्वामनुसंदधामि भगवद्गीतेभवद्वेषिणीम्॥९॥
नमोऽस्तुते व्यास विशाल बुद्धे फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र।
येनत्वया भारततैल पूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः॥१०॥

श्रीरामजी सायंकाल-स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।
नवकंज लोचन, कंज-मुख करकंज पदं कंजारुणं॥
कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुन्दरं।
पट पीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥
भजु दीनबन्धु दिनेशदानव, दैत्यवंश निकंदनं।
रघुनंद आनंद कन्द कोशलचन्द दशरथ नंदनं॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार, अंग विभूषणम्।
अजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणम्॥
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजन।
मम हृदय-कुंज निवास करु कामादि खलदल गंजनं॥

श्रीजानकीजी की सायंकाल-स्तुति

जय जनकनन्दिनि जगतवन्दनि जनकनन्दनि जानकी।
रघुवीर नयन चकोर वन्दनि बल्लभा प्रिय प्राणकी॥

तव कंज पद मकरन्द सेवित योगिजन मन अलि किये।
करिपान गिनत न आन हिय निर्वान सुख आनन्द हिये॥
सुख खानि मंगल दानि जन जिय जानि शरण जो जात हैं।
तव नाथ सब सुख साथ करि तेहि हाथ रीझि विकात हैं॥
ब्रह्मादि शिव सनकादि सुरपति आदि निज मुख भाषहीं।
तव कृपा नयन कटाक्ष चितवनि दिवस-निसि अभिलाषहीं॥
तनु पाइ तुमहिं विहाइ जड़मति आन देवहिं जो सेवहीं।
हत भाग सुरतरु त्याग करि अनुराग रेड़हिं सेवहीं॥
यह आस रघुबर दास की सुखरासि पूरण कीजिये।
निज चरन कमल सनेह जनक विदेहजा बर दीजिये॥
मन जाहि राच्यो मिलिहि सो बर सहज सुन्दर साँवरो।
करुनानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो॥
यहि भाँति गौरि आसीष सुनि सिय सहित हिय हर्षित अलीं।
तुलसी भवानी पूजि पुनि-पुनि मुदित-मन मंदिर चलीं॥
सोरठा—जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे॥१॥
दोहा—सो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुवंशमणि, हरहु विसम भवभीर॥२॥
कामिहि नारि पियारी जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमिदाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहि राम॥३॥
प्रनतपाल रघुवंश मणि करुनासिन्धु खरारि।
गये सरन प्रभु राखिहैं, तव अपराध बिसारी॥४॥
श्रवण सुयश सुनि आयऊँ, प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि-त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुवीर॥५॥

अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान।
जन्म-जन्म रति राम पद, यह वरदान न आन॥६॥
बार-बार बर माँगऊँ, हरिषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग॥७॥
वरनि उमापति राम गुण, हरषि गये कैलाश।
तब प्रभु कपिन्ह दिखायेउ, सब विधि सुखप्रद वास॥८॥
एक मैं मन्द मोह बस, कुटिल हृदय अज्ञान।
पुनि प्रभु मोहि न बिसारेउ, दिनबन्धु भगवान॥९॥
नहिं विद्या नहिं बाहुबल, नहिं खरचन को दाम।
मोसे पति अपंग की, तुम पति राखहु राम॥१०॥
विनती करि मुनि नाय सिर, कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि, कवहुँ तजै मति मोरि॥११॥
एक क्षत्र एक मुकुट मणि, सब बरनन पर जोऊ।
तुलसी रघुबर नाम के, बरन बिरत दोऊ॥१२॥
कोटि कल्प काशी बसै, मथुरा कल्प सहास।
एक निमिष सरयू बसै, तुलै न तुलसीदास॥१३॥
राम नगरिया राम की, बसै सरजु के तीर।
अचल राज महाराज की, चौकी हनुमत वीर॥१४॥
राम बाम दिशि जानकी, लखन दाहिनी ओर।
ध्यान सकल कल्यानमय, सुर तुरु तुलसी तोर॥१५॥
कहा कहौं छबि आजु की, भले बिराजेउ नाथ।
तुलसी मस्तक तब नवै, (जब) धनुष बाण लेव हाथ॥१६॥
कित मुरली कित चन्द्रिका, कित गोपियन के साथ।
अपने जनके कारणे श्रीकृष्ण भये रघुनाथ॥१७॥

अवध धाम धामादि पति, अवतारन पति राम।
सकल सिद्धि पति जानकी, दासन पति हनुमान॥१८॥
कर गहि धनुष चढ़ाइयो, चकित भए सब भूप।
मगन भई श्री जानकी, देखि रामजी का रूप॥१९॥
नील सरोरुह नीलमनि, नील नीर धर श्याम।
लाजहिं तन शोभा निरखि, कोटि-कोटि सत काम॥
श्रीगुरु मूरति मुख चन्द्रमा, सेवक नयन चकोर॥२०॥
अष्ट पहर निरखत रहों, गुरु चरनन की ओर।
चलो सखी वहाँ जाइये, जहाँ बसैं वृजराज।
गोरस बेचत हरि मिलैं, एक पंथ दोउ काज॥२२॥
वृज चौरासी कोष में चार ग्राम निज धाम।
वृन्दावन और मधुपुरी बरसानो नन्दग्राम॥२३॥
वृन्दावन सो बन नहीं, नन्दग्राम सो ग्राम।
वंशीवट सो बट नहीं, श्रीरामकृष्ण सो नाम॥२४॥
राधे तुम बड़ भागिनी, कौन तपस्या कीन।
तीन लोक तारन तरन, सो तेरे आधीन॥२५॥
आपनि दारुन दीनता, कहऊँ सबहिं सिर नाय।
देखे बिनु रघुनाथ पद, जियकै जरनि न जाय॥२६॥
कोटिन तीरथ कामना, कोटिन रास बिलास।
रजधानी रघुनाथ की, गावैं तुलसीदास॥२७॥
अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारन रहित दयाल।
तुलसीदास सठ ताहि भजु, छाँड़ि कपट जंजाल॥२८॥
एक घरी आधी घरी, आधिहु में पुनि आध।
तुलसी संगत साधु की, हरै कोटि अपराध॥२९॥

सियाबर रामचन्द्र की जय, अयोध्या रामलला की जय, पवनसुत श्री हनुमान जी की जय, श्री उमापति महादेव की जय, रमापति रामचन्द्र जी की जय, वृन्दावन कृष्ण बलदाऊ जी की जय बोलो भाई सब सन्तन की जय

॥अपने गुरु गोविन्द की जय॥

श्रीहनुमानाष्टक

चरचित चंदन सिन्दूर भूषण नख सिद्ध रूप अखण्डितम्। अपर बल भुजदण्ड बाहुश्री हनुमन्तं महाबलम्॥ श्री रामदूत महाबलम्। श्री रामतेज प्रताप राजत राघव कुलसेवितम्। पवन नन्दन वीरबाहु श्रीहनु०॥ उदति दिनकर देव सुरपति कपते संग दुर्जनम्। अग्रमुख श्रीराम पूजा॥ श्रीहनु०॥ युद्धमध्ये हते दानव शेल वृक्ष उखाड़ितम्॥ देव सुरपति करत जय जय॥श्री हनु०॥ रामदूत प्रचण्ड योधा सागर शैल उलंघन। लंका उजारि सिया सुध लाये॥ श्री हनु०॥ नील नल रणघोर योधा सुग्रीव राज्य कपीश्वरम्॥ जामवन्त अरु बलि नन्दन॥ श्री हनु०॥ सिंह रूप निशंक गर्जत डगमगे महि भू धरम्॥ हांक देत दिगपाल कते॥ श्री हनु०॥ वीर रूप निशक गरजत दुष्ट दानव मर्दनम्। भूत प्रेत पिशाच कपै॥ श्री हनु०॥ द्विविद मयन्द अशंक योद्धा केशरी अति बहुबलम्॥ देव अंश अवतार आये॥ श्री हनु०॥ अष्टम पढ़त निशिदिन विष्णु लोक स गच्छति॥ दासतुलसी शरण आयै॥ श्री हनु०॥

॥ इति हनुमानाष्टक समाप्त॥

अथ श्रीरामाष्टकम्

श्री अवधपुरी निज धाम कहाये, निकट सरयू गंग हैं।
दशरथ नन्दन असुर भजन सियाराम जी पूरण ब्रह्म हैं,
राघव राम जी पूरण ब्रह्म हैं॥
सहित सीता भ्रात लक्ष्मण धनुष धारी सीता रामजी हैं।
चित्रकूट तप लोक कहिये, सियाराम जी पूण ब्रह्म हैं।राघव० ॥१॥
भाल तिलक विशाल लोचन, आनन्दकारी सीतारामजी हैं।
साँवली सूरति माधुरी मूरति, सियारामजी० ॥राघव० ॥२॥
लंकापुरी छिनमाहिं जारेउ आज्ञाकारी श्रीहनुमानजी हैं।
रावण मारि विभीषण थापेउ। सियाराम जी० राघव० ॥३॥
अष्ट सिद्धि नव सिद्धि के दाता भक्ति मुक्ति वरदायकम्।
ध्यान योग स्वरूप सुन्दर, सियाराम जी० राघव० ॥४॥
ब्रह्मा शेष महेश नारद कोटि, अट्ठासी ऋषि मुनि देवता।
इन्द्रादिक सनकादि ध्यावहिं, सियाराम जी० राघव० ॥५॥
अनन्त कला जुग चारि प्रगटे, सप्त दीप नवखण्ड हैं।
आदि अन्त मध्य खोजि देख्यो, सियाराम० राघव० ॥६॥
चेतन होय छिन माहिं चेतो युग युग तो लीला रची।
श्रीराम करता श्रीरामभरता, सियारामजी० राघव० ॥७॥
श्री रामअष्टक पढ़त निसि दिन श्रीराम धाम सिधावहीं।
श्रीरामानन्द अवतार अद्भुत, सियाराम जी० राघव० ॥८॥

अथ श्रीकृष्णाष्टकम्

नन्द नन्दन जगत वन्दन चरण रज कुब्जा तरी।
युग चारि पूरण ब्रह्म कहिए श्रीकृष्ण राजत।
मधुपुरी श्री गोपाल जी राजत मधुपुरी॥१॥
वंशी बट तट निकट यमुना साँवरे मुरलीधरी।
मुरली की धुनि सुनि तीनों लोक मोहे।श्रीकृष्ण०॥२॥
मुकुट लटकत पीतापट सिर खौर चन्दन की बनी।
श्री बनवारी लाल जी गोपाल जी कहिए।श्रीकृष्ण राजत०॥३॥
रास रवनी शेष शंकर रटत हैं छिन छिन धरी।
इन्द्र चन्द्र कुबेर ब्रह्मा श्री कृष्ण राजत मधुपुरी॥श्रीगो०॥४॥
वृन्दावन में मदन मोहन, अष्ट सिद्धि न निधि करी।
काली नाग घनश्याम नाथ्यो, श्रीकृष्ण राजत मधुपुरी। श्रीगो०॥॥
गोपी गोपी संग लीन्हें, कुंजन वन क्रीड़ा करी।
रास राच्यो वसुदेव नन्दन श्रीकृष्ण राजत मधुपुरी।श्रीगो०॥५॥
कंस वंश विध्वंस मोहन वृज बधू पावनी करी।
उग्रसेन को राज दीन्हों, श्रीकृष्ण राजत मधुपुरी।श्रीगो०॥६॥
श्रीकृष्ण अष्टक पढ़त निसि दिन विष्णु लोक सिधावही।
निम्बानन्द अवतार अद्भुत श्रीकृष्ण राजत मधुपुरी।श्रीगो०॥७॥

श्रीनृसिंह भगवान् की स्तुति

जय जय अविनासी सब घट बासी जय नृसिंह भगवाना।
जब असुर रिषायो भक्त सतायो, लीन्हें हाथ कृपाना॥
तब बार न लायो रूप बनायो, प्रगटे कृपा निधाना।

असुराधिप मारी, भक्त उबारी, कम्पेउ भू अस्माना॥ १ ॥
सुर मुनि जय बोलैं, पास न डोलैं, रमाहिए भय भारी।
प्रह्लाद बुलायो विधि समुझायो, तुम हित रूप खरारी॥
अब हरि ढिग जाओ उन्हें मनाओ, बिनती सुनो हमारी।
सुनतै उठि धाए नहिं घबराए, प्रभु लखि आनन्द भारी॥ २ ॥
हरि भरिकै नयना बोले बयना, क्षमि अपराध हमारो।
मम नाम उचारेउ दुष्ट ने मारेउ, आवत भयउ अबारो॥
निज गोद बिठाए, हिए लगाए, चाटिगे संकट सारो।
बहु विधि समुझायो, तिलक लगायो, राज दयो सुख भारी॥ ३ ॥
गावहिं सब सन्ता जस भगवन्ता, भगत हेतु तनुधारी।
जे नाम उचारैं प्रभु दुख टारैं, जो जेहि भाव पुकारी॥
ते सब सुख पावहिं चरित जे गावहिं, नयन 'बिन्दु' भरि बारी।
अब सुनहु कृपाला परम दयाला, हमहैं शरण तुम्हारी॥ ४ ॥

॥बोलिए श्रीनृसिंह देव की जय॥

श्रीराधा जी की स्तुति

प्रगटी श्रीराधा रूप अगाधा सब सुख साधा सिर नावैं।
पोषनि जन साधा मेटनि बाधा लखि रति कोटि लजावैं॥
आजु भयो मंगल बृज घर घर सब मिलि मंगल गावैं।
गोपी गोप भाग्य कीरति का गाय गाय प्रगटावैं॥
सुर नर मुनि हर्षहिं सुमनहिं वर्षहिं चढ़े विमानन आवैं।
प्रमुदित मिलि गावैं, लखि सुख पावैं, बाजन विविधि बजावैं॥
नारद सनकादिक शिव ब्रह्मादिक भृगुआदिक मुनि जेता।
इन्द्रादिक जेता जे जहँ तेता आए सुजन समेता॥

सब कर जोरी करत निहोरी जय वृषभानु दुलारी।
सब कीर्ति कुमारी जय हर प्यारी जय जय सुख दातारी।
हे नित्य किशोरी पिय चित चोरी, यह विनती सुनि लीजै।
बृज बासहिं दीजै बसि रस पीजैं चरण शरण महँ लीजै॥
कर जोरि मनाऊँ यह बर पाऊँ दम्पत्ति यस नित गाऊँ।
पद कमल सुतोरा मद रस मोरा मन नित तहाँ बसाऊँ॥
यह भाँति सकल सुर अस्तुति करि-करि निज धाम सिधाए।
नन्दादिक आए, अति सुख पाए प्रेम परस्पर भाए॥
कोइ इक गावहिं कोइ बजावहिं कोइ दही लै धावहिं।
आइ आइ बरसाने बीथिन जय जयकार मनावहिं॥
भानु नन्द से मिले धाइ के कण्ठ से कण्ठ लगावैं।
श्रीभट निकट निहारि राधिका श्याम नयन सचुपावैं॥
दोहा—कुञ्ज बिहारी लाड़िली कुञ्जबिहारी हेतु।
बरसाने प्रगटत भई श्री वृषभानु निकेतु॥
॥बोलिए वृषभानु दुलारी की जय॥

श्रीबावन भगवान् की स्तुति

छन्द—प्रगटे असुरारी जन हितकारी रूप चतुर्भुजधारी।
अति प्रेम गँभीरा, पुलक सरीरा विनय करै महतारी॥
जय भव भय त्राता, बोली माता हे घट घट के बासी।
हे सारंगपानी, महिमा जानी, हे अनादि अविनासी॥१॥
सुरमातु विचारी, गिरा उचारी, गद गद रुक गई बानी।
पुनि कहै सयानी, इच्छा दानी, सुर रंजन तव बानी॥
जे सरनहिं आवहिं, सब सुख पावहिं, शरणा गत भगवन्ता।

करि कृपा बिलोकहिं नयननि रोकहिं, संकट हरै अनन्ता ॥ २ ॥
सुनिकै हँसि बोले, बचन अमोले, माता हियकै जानी।
बावन बनि आऊँ, स्वर्ग दिलाऊँ यह मेरे मन मानी ॥
इतना ही कहिकै, बावन बनिकै, लीला करी अनूपा।
पहुँचे मखशाला, अदितीलाला, (जहँ) यज्ञ करै बलि भूला ॥ ३ ॥
सब लखि चकराए, अतिहर्षाए विनय करै महाराजा।
दें भूमि तीन पग, आसन जप जग, अधिक केर नहिं काजा ॥
सब काज संवारे, बावन प्यारे, देवन स्वर्गहि दीन्हों।
बलि वंश पताला, संग कृपाला (हरि) चरन, बिन्दु गहि लीन्हों ॥ ४ ॥
दोहा—भादौं शुक्ला द्वादशी, अभिजित अमित अनूप।
अज अबिनासी अदिति गृह, प्रगटेउ बावन रूप ॥

अथ चारधाम की बड़ी जय

दोहा—जेवत सन्त हरि हर करैं धन्य पुरुषन भाय।
जिनके गृह पावन भए सन्त पधारे आय ॥
बोलिए सन्तो मधुरी सी बानी प्रेम से श्रीहरे।

१. श्रीरामकृष्ण देव की जय २. अवधपुरी मधुपुरी की ३. श्री अवध मिथिला की ४. दशरथ नन्दन रामरघुनाथ की ५. कौशल्या नन्दन रामरघुनाथ की ६. कैकेइनन्दन राम रघुनाथ की ७. सुमित्रानन्दन रामरघुनाथ की ८. अवध दुलारे रामरघुनाथ की ९. श्री जन मन रखवारे राम रघुनाथ की १०. श्री अयोध्या धाम की ११. अवध सरजू की १२. आद्य सरजू की १३. मानस सरयू की १४. श्री रामकोट की १५. श्रीरामजन्मभूमि की १६. श्रीजन्मस्थानकी १७. श्री

सीतारसोई की १८. श्री कनकभवन की १९. श्री कौशल्या भवन की २०. श्री कैकई भवन की २१. श्री सुमित्रा भवन की २२. श्रीरत्नसिंहासन की २३. श्री हनुमान गढ़ी की २४. श्री हनुमानजी महाराज की २५. श्री सुग्रीव टीला की २६. श्री सुग्रीव जी महाराज की २७. श्री अंगद टीला की २८. श्री अंगद जी महाराज की २९. श्री वशिष्ठ मुनि की ३०. श्री वशिष्ठ भवन की ३१. श्री वामदेव आश्रम की ३२. श्री वामदेव मुनी की ३३. श्री सुतीक्षण आश्रम की ३४. श्री सुतीक्षण मुनि की ३५. श्री धनन्जय तीर्थ की ३६. चक्रतीर्थ की ३७. चक्रभगवान की ३८. ब्रह्मघाट की ३९. गुप्तार घाट की ४०. श्री रामघाट की ४१. श्री जानकी घाट की ४२. श्री लक्ष्मणघाट की ४३. श्री कौशल्य घाट की ४४. श्री कैकई घाट की ४५. श्री सुमित्राघाट की ४६. श्री वासुदेव घाट की ४७. श्री वासुदेव भगवान की ४८. श्री बाल्मीकि घाट की ४९. श्री बाल्मीकि महाराज की ५०. श्री तुलसी घाट की ५१. श्री सीताकुण्ड की ५२. श्री तुलसी दास महाराज की ५३. श्री हनुमान कुण्ड की ५४. श्री स्वर्णखनी कुण्ड की ५५. श्री अग्निकुण्ड की ५६. श्री सीताकुण्ड की ५७. श्री विद्याकुण्ड की ५८. श्री खजुहा कुण्ड की ५९. श्री सूर्यकुण्ड की ६०. श्री सूर्यनारायण भगवान की ६१. श्री भरतकुण्ड की ६२. श्री भरतकुण्ड की ६३. श्री भरतजी महाराज की ६४. श्री भरतकूप ६५. श्री विल्हरघाट की ६६. श्री नन्दीग्राम की ६७. श्री यमथलातीर्थ की ६८. श्री नन्दीग्राम की ६९. श्री दाशरथी राम की ७०. श्री रघुवंश

मणि की ७१. श्री मनोरमागंगा की ७२. श्री भागीरथी गंगा की ७३. श्री त्रिवेनी संगम की ७४. गण्डकी गंगा की ७५. श्री कालीगंगा की ७६. श्री शालिग्राम गंगा की ७७. श्री शालिग्राम की ७८. श्री शालिग्राम देव की ७९. श्री शालीग्राम परमात्मा की ८०. श्री तुलसीमहारानी की ८१. श्री सतीवृन्दा की ८२. नरसिंह खोला की ८३. श्रीनरसिंह भगवान की ८४. श्री जनकपुर धाम की ८५. श्रीजनक जी महाराज की ८६. श्रीजनक जी महाराज की ८७. श्री जनक विदेह की ८८. श्री जनक नन्दिनी ८९. श्री जनकदुलारी की ९०. श्री जनकलाड़िली जी की ९१. श्री जनककिशोर की ९२. श्री जनक सुनैना की ९३. श्री कमला-विमला की ९४. श्री दूधमति गंगा की ९५. श्री नारायनी गंगा की ९६. श्री भरत के भाई की ९७. श्री जनक के जमाई की ९८. श्री अरगजा कुण्ड की ९९. श्री दशरथ तालाब की १००. श्री रत्नसागर की १०१. श्री गिरिजा देवी की १०२. आदिबाराह स्वामी की १०३. श्री कालीकन्त की १०४. चटगाँव की १०५. बालबाँकुड़ा की १०६. बड़वा कुण्ड की १०७. श्री हयग्रीव भगवान की १०८. श्रीकमक्षा देवी की १०९. श्री परशुराम कुण्ड की ११०. श्री कपिलमुनी की १११. श्री कपिलमुनि दरियाई की ११२. श्री गंगासागर की ११३. श्री रामकुण्ड की ११४. श्री सीताकुण्ड की ११५. श्री लक्षिमन कुण्ड की ११६. श्री रामानुजस्वामी की ११७. श्री छाछ कामिनी की ११८. श्री क्षी चोर ठाकुर की ११९. साखी गोपाल की १२०. श्री वृन्दावन बसइया की १२१. श्री माखन

मणि की ७१. श्री मनोरमागंगा की ७२. श्री भागीरथी गंगा की ७३. श्री त्रिवेनी संगम की ७४. गण्डकी गंगा की ७५. श्री कालीगंगा की ७६. श्री शालिग्राम गंगा की ७७. श्री शालिग्राम की ७८. श्री शालिग्राम देव की ७९. श्री शालीग्राम परमात्मा की ८०. श्री तुलसीमहारानी की ८१. श्री सतीवृन्दा की ८२. नरसिंह खोला की ८३. श्रीनरसिंह भगवान की ८४. श्री जनकपुर धाम की ८५. श्रीजनक जी महाराज की ८६. श्रीजनक जी महाराज की ८७. श्री जनक विदेह की ८८. श्री जनक नन्दिनी ८९. श्री जनकदुलारी की ९०. श्री जनकलाड़िली जी की ९१. श्री जनककिशोर की ९२. श्री जनक सुनैना की ९३. श्री कमला-विमला की ९४. श्री दूधमति गंगा की ९५. श्री नारायनी गंगा की ९६. श्री भरत के भाई की ९७. श्री जनक के जमाई की ९८. श्री अरगजा कुण्ड की ९९. श्री दशरथ तालाब की १००. श्री रत्नसागर की १०१. श्री गिरिजा देवी की १०२. आदिबाराह स्वामी की १०३. श्री कालीकन्त की १०४. चटगाँव की १०५. बालबाँकुड़ा की १०६. बड़वा कुण्ड की १०७. श्री हयग्रीव भगवान की १०८. श्रीकमक्षा देवी की १०९. श्री परशुराम कुण्ड की ११०. श्री कपिलमुनी की १११. श्री कपिलमुनि दरियाई की ११२. श्री गंगासागर की ११३. श्री रामकुण्ड की ११४. श्री सीताकुण्ड की ११५. श्री लक्षिमन कुण्ड की ११६. श्री रामानुजस्वामी की ११७. श्री छाछ कामिनी की ११८. श्री क्षी चोर ठाकुर की ११९. साखी गोपाल की १२०. श्री वृन्दावन बसइया की १२१. श्री माखन

चुरइया की १२२. श्री वंशी बजैया की १२३. श्री रासरचैया की १२४. श्री गाय चरइया की १२५. नाग नथइया की १२६. श्री दावानल पिवइया १२७. श्री जनमन चुरइया की १२८. श्री दाऊजी के भइया की १२९. श्री कृष्ण कन्हैया की १३०. श्री यशुमति के छइया की १३१. श्री राधामाधव भगवान की १३२. श्री जगन्नाथ धाम की १३३. श्री जगन्नाथ स्वामी की १३४. श्री बलभद्र सुभद्राकी १३५. श्रीइन्द्रद्युम्न की १३६. श्री मार्कण्डे की १३७. श्री महोदधि सागर की १३८. श्री स्वेत गंगा की १३९. श्री रोहिणी तीर्थ की १४०. श्री रोहिणी कुण्ड की १४१. श्री बटे कृष्ण भगवान की १४२. श्री सिद्ध हनुमान की १४३. श्री वीर हनुमान की १४४. श्री अतुलित बल हनुमान की १४५. श्री मच्छोद्री हनुमान की १४६. सिन्धु लंघन हनुमान की १४७. मैनांक परसर हनुमान की १४८. सिंहिका मर्दन हनुमान की १४९. लंकिनी मानमर्दन हनुमान की १५०. विभीषण ज्ञान वर्धन की १५१. श्री सीताप्रबोधक हनुमान की १५२. अशोक वनविनासक हनुमान की १५३. निसाचर विनासक हनुमान की १५४. अच्छय मर्दन हनुमान की १५५. लंकादहन हनुमान की १५६. कालनेमि हन्ता हनुमान की १५७. अहिरावण हन्ता हनुमान की १५८. भरत सहायक हनुमान की १५९. गोरखमूर्ति हनुमान की १६०. पंचमुखी हनुमान की १६१. अनन्त बलवन्त हनुमान की १६२. श्रीराम प्रिय सेवक हनुमान की १६३. शिवरी नारायण की १६४. राजीव लोचन भगवान की १६५. अमरकण्टक पर्वत की १६६. कूर्म धारा

की १६७. सहोद्री नृसिंह की १६८. पन्ना नृसिंह की १६९. शेषाचल बासी की १७०. सर्वघट निवासी की १७१. बैकुण्ठ विलासी की १७२. श्री बेंकटेश की १७३. उग्रबेंकटेश की १७४. प्रसन्नबेंकटेश की १७५. वीर बेंकटेश की १७६. बेंकटेश महाराज की १७७. पुष्करणी गंगा की १७८. झपाली हनुमान की १७९. पाप नासिनी गंगा की १८०. आकाश गंगा की १८१. पाताल गंगा की १८२. संकट योनि गंगा की १८३. त्रिपथ गामिनी गंगा की १८४. श्री भागीरथी गंगा की १८५. श्री तिरुपति नाथ की १८६. श्रीचरणकुण्ड की १८७. गोविन्द महाराज की १८८. श्री सीताराम जी की १८९. श्रीलक्ष्मन जी की १९०. श्री लक्ष्मी जी की १९१. चिन्तानूर की १९२. कुवार स्वामी की १९३. वीरराघव की १९४. प्रेम मधुकर की १९५. रामानुज स्वामी की १९६. विष्णुकांची की १९७. शिवकांची की १९८. वरदराज स्वामी की १९९. वरदराज भगवान की २००. श्री मुष्टि स्वामी की २०१. श्री पक्षीतीर्थ की २०२. श्री रंगनाथ धाम की २०३. श्रीरंगस्वामी की २०४. श्रीरंग भगवान की २०५. श्रीकावेरी गंगा की २०६. दक्षिण द्वारिका की २०७. दक्षिण कौशल की २०८. श्री दक्षिणावर्त्त शंख की २०९. नव पाषाण की २१०. हर बोला की २११. श्रीरामनाम धाम की २१२. धनुषतीर्थ की २१३. राम झरोखा की २१४. श्री रामकुण्ड की २१५. श्री सीताकुण्ड की २१६. लक्ष्मण कुण्ड की २१७. श्री राममोहल्ले की २१८. द्रव्यसेन भगवान की २१९. ठीकर स्वामी की २२०. सुन्दर बाहु भगवान की

२२१. तोताद्री नाथ की २२२. तोताद्री मठ की २२३. तोताद्री भगवान की २२४. लम्बेनारायण की २२५. कुमारी कन्या की २२६. आदि केशव की २२७. पद्नाभम भगवान की २२८. जनार्दन भगवान की २२९. अड़सठ तीर्थ की २३०. ब्रह्मपुत्र की २३१. देवनारायण की २३२. जंगजीत गोपाल की २३३. मैलै कोटा पाट की २३४. कल्यानी गंगा की २३५. कार्तिकेय स्वामी की २३६. पंपापुरी की २३७. पम्पा सरोवर २३७. पम्पापति भगवान की २३९. अंजनी पर्वत की २४०. अन्जनी माता की २४१. बाल हनुमान की २४२. बालि सुग्रीव की २४३. अंगद हनुमान की २४४. श्री रामलखन जानकी की २४५. स्फटिक शिला की २४६. तुंगभद्रा गंगा की २४७. कृष्णागंगा की २४८. उडपी कृष्ण की २४९. शृंगेरी मठ की २५०. गोकर्ण २५१. गोला गोकरन नाथ की २५२. परशुरामी गंगा की २५३. तुंगनाथ की २५४. पंढरीनाथ की २५५. चन्द्रभागा गंगा की २५६. रामटेक की २५७. अगस्त तीर्थ की २५८. सर्वतीर्थ की २५९. कपिल धार की २६०. गोदावरी गंगा की २६१. गंगा द्वार की २६२. कुशावर्त की २६३. चक्रतीर्थ की २६४. नासिकपुरी की २६५. रामकुण्ड की २६६. श्रीपञ्चवटी की २६७. श्रीसीताराम की २६८. लक्ष्मणयती की २६९. तपोवन की २७०. लम्बे हनुमान की २७१. दण्डकारण्य की २७२. लक्ष्मण कुण्ड की २७३. श्री सीताकुण्ड की २७४. श्रीरामशैया की २७५. अष्टभुजी देवी की २७६. तप्तकुण्ड की २७७. उनई माता की २७८. ताप्ती गंगा की २७९.

भृगक्षेम की २८०. दशाश्वमेधघाट की २८१. शुकतीर्थ की २८२. शुक्रनारायण की २८३. शेष नारायण की २८४. ओरि संगम की २८५. श्री शुकदेवमुनी की २८६. श्रीव्यासभगवानकी २८७. ब्रह्मपुरी २८८. ब्रह्मतोड़ की २८९. ओंकारनाथ की २९०. अवन्तिकापुरी की २९१. महाकालेश्वर २९२. छिप्रा गंगा की २९३. अंगपात क्षेत्र की २९४. डाकौर नाथ की २९५. गोमती तीर्थ की २९६. रणछोड़टीकम की २९७. भीमनाथ की २९८. ब्रह्मकुण्ड की २९९. श्री गुरुचेला की ३००. माधो भगवान की ३०१. सीत पुत्रों की ३०२. तुलसी श्याम की ३०३. माधोप्राची की ३०४. आदि प्राची की ३०५. प्रभास पाटण की ३०६. श्री हनुमानधारा की ३०७. श्रीशेष वन की ३०८. पादुका तीर्थ की ३०९. श्रीरामानन्द स्वामी की ३१०. श्रीगोमुखी धारा की ३११. श्री अम्बिका देवी की श्री अम्बिका वन की ३१२. महादेव की ३१३. श्री दत्तात्रेय भगवान की ३१४. श्री दामोदरकुण्ड की ३१५. मृगीकुण्ड की ३१६. श्री सुदामापुरी की ३१७. श्री सुदामा जी महाराज की ३१८. श्री गोमतीसंगम की ३१९. संगम नारायण की ३२०. श्री द्वारकाधाम की ३२१. श्री द्वारिकाधीश की ३२२. श्री रणछोड़टीकम की ३२३. कुँवर कल्याण की ३२४. श्री माधौ पुरुषोत्तम की ३२५. श्री रुकुमिनी महारानी की ३२६. सत्यभामा महारानी की ३२७. जाम्वती महारानी की ३२८. मित्र बिन्द्रा महारानी की ३२९. श्री सत्यामहारानी की ३३०. श्री यमुना महारानी की ३३१. श्री लक्ष्मणा महारानी की

३३२. श्री भद्राजी महारानी की ३३३. शंख नारायण की ३३४. शंख उद्धार की ३३५. नारायणसर क्षेत्र की ३३६. आदि नारायण की ३३७. चलपेश्वर महादेव की ३३८. नीलकंठ महादेव की ३३९. आशापुरी की ३४०. धरणीधर भगवान की ३४१. धरणीउद्धारक भगवान की ३४२. बिन्दु सरोवर की ३४३. श्री कर्दम ऋषि की ३४४. देवहूति माता की ३४५. श्रीकपिल भगवान की ३४६. सरस्वती गंगा की ३४७. ज्ञानबापी की ३४८. अहल्याकुण्ड की ३४९. श्री गोविन्द माधव की ३५०. अम्बा माता की ३५१. आबू पर्वत की ३५२. आबू के सिद्धों की ३५३. हृषीकेशभगवान की ३५४. मधुसूदन भगवान की ३५५. वशिष्ठमुनि की ३५६. ब्रह्मकुण्ड की ३५७. नखीतालाब की ३५८. पुष्कर क्षेत्र की ३५९. श्री ब्रह्माजीमहाराज की ३६०. बूढ़े पुष्कर की ३६१. रूपचतुरभुज ठाकुर की ३६२. लोहाग पुष्कर की ३६३. प्रह्लाद महाराज की ३६४. प्रह्लाद पुरी की ३६५. प्रह्लाद पर्वत की ३६६. श्रीनृसिंह स्वामी की ३६७. नृसिंह कटाक्ष की ३६८. तिलोदकी गंगा की ३६९. नागा अर्जुन की ३७०. त्रिकूटादेवी की ३७१. मणिकर्णिका की ३७२. त्रिलोकनाथ ठाकुर की ३७३. अग्रतीर्थ की ३७४. रेवाल सरतीर्थ की ३७५. श्री कुरुक्षेत्र की ३७६. श्री हरिद्वार की ३७७. श्री गंगाद्वार की ३७८. श्री गंगा भागीरथी की ३७९. श्री हरि की पैड़ी की ३८०. श्रीहरिनारायण की ३८१. श्रीहरिहरक्षेत्र की ३८२. श्री कुशावर्त की ३८३. श्रीनीलधारा की ३८४. श्री पुलहआश्रम की ३८५. श्री हृषीकेश भगवान

की ३८६. श्री रामजी महाराज की ३८७. लक्ष्मणजी महाराज की ३८८. भरतजी महाराज की ३८९. श्रीशत्रुघ्न जी महाराज की ३९०. लक्ष्मणझूला की ३९१. देवप्रयाग की ३९२. करणप्रयाग की ३९३. नन्दप्रयाग की ३९४. विष्णु प्रयाग की ३९५. गुप्तकाशी की ३९६. त्रियुगी नारायण की ३९७. केदारनाथ की ३९८. मन्दाकिनी गंगा की ३९९. ऊखीमठ की ४००. तुंगनाथ की ४०१. जोशीमठ की ४०२. पाण्डुकेश्वर की ४०३. अमरनाथ की ४०४. बद्रीनाथ धाम की ४०५. योगध्यानी बाला की ४०६. तप्तकुण्ड की ४०७. नागरकुण्ड की ४०८. अलकनन्दागंगा की ४०९. कूर्मधारा की ४१०. आदिबद्री की ४११. नरनारायण की ४१२. कौसल्या गंगा की ४१३. श्रीरामगंगा की ४१४. वृन्दावनचन्द की ४१५.आनन्दकन्द की ४१६. वृन्दावन बिहारी की ४१७. वृन्दावन रक्षपाल की ४१८. बाँके बिहारी की ४१९. मुरलीमनोहर की ४२०. मुरलीधर श्याम की ४२१. छैलविहारी की ४२२. कुंजबिहारी की ४२३. धेनुवनचारी की ४२४. राधामाधव की ४२५. राधारमण भगवान की ४२६. राधा विहारी भगवान की ४२७. राधावल्लभ लाल की ४२८. राधा विनोदक प्यारे की ४२९. वृषभान लालिड़ी की ४३०. कीर्ति कुमारी की ४३१. बरसाने वाली की ४३२.नन्दगाँव की ४३३. राधिका रमण भगवान की ४३४. गोप विहारी की ४३५. गोपरक्षण की ४३६. गोपक्रीड़ा की ४३७. गोपिका नन्दन की ४३८. यशोदा नन्दन की जय ४३९. नन्दनन्दन की जय ४४०.

वसुदेव नन्दन की जय ४४१. देवकी नन्दन की जय ४४२. रोहनी नन्दन की ४४३. श्रीकृष्णबलराम की ४४४. बलदाउ के भाई की ४४५. वृषभानु के जमाई की ४४६. माखनचोर की ४४७. दधि चोर की ४४८. चीरचोर की ४४९. श्रीजनमन चोर की ४५०. चोरसिर मोर की ४५१. श्रीनन्द किशोर की ४५२. श्रीबालाकृष्ण लाल की ४५३. श्री मदनगोपाल की ४५४. वंशीवट की ४५५. श्रीमदनमोहन की ४५६. धीरसमीर की ४५७. गोवरधन धारी की ४५८. गोवरधन धारी की ४५९. गोवरधन पर्वत की ४६०. मानसी गंगा की ४६१. मथुरापुरी की ४६२. मुष्टि मर्दन की ४६३. चाडूरमर्दन की ४६४. कंसहन्ता की ४६५. कंस उद्धारक की ४६६. केशी उद्धारक की ४६७. कुबलिया पीड़ मर्दन की ४६८. कुब्जापावनी की ४६९. कुब्जारमण की ४७०. मोरमुकुटधारी की ४७१. अटलबिहारी की ४७२. यदुवश मणि की ४७३. यदुवंश भूषन की ४७४. यदुवंश दीपक की ४७५. यदुवंश प्रकाशक की ४७६. श्रीयदुवंश उजागर दीपक की ४७७. वासुदेवभगवान की ४७८. शंकरर्षन भगवान की ४७९. श्री प्रद्युम्न भगवान की ४८०.अनिरुद्ध भगवान की ४८१. चतुर्ब्यूह भगवान की ४८२. नैमिषारण्य की ४८३. धेनुमती गंगा की ४८४. कुशावर्त की ४८५. नीलचक्र की ४८६. लम्बे हनुमान की ४८७. अट्ठासी हजार ऋषियों की ४८८. फल्कूगंगा की ४८९. गयापुरी की ४९०. विष्णुपाद गया की ४९१. वैजनाथधाम की ४९२. वैजनाथ महादेव की ४९३. भृगुक्षेत्र की ४९४. बक्सर क्षेत्र की ४९५.

विश्वामित्रज की ४९६. काशीपुरी की ४९७. काशीविश्वनाथ की ४९८. पंचगंगाघाट की ४९९. भगीरथी गंगा की ५००. मणिकर्णिकाघाट की ५०१. पंचकोशी की ५०२. नन्दीश्वर की ५०३. अस्सीघाट की ५०४. तीर्थराज प्रयाग की ५०५. त्रिवेनी संगम की ५०६. माधव त्रिवेणी की ५०७. सरस्वती गंगा की ५०८. जमुना महारानी की ५०९. श्री गंगामहारानी की ५१०. भरद्वाज मुनि की ५११. अक्षय बट की ५१२. सोमेश्वर महादेव की ५१३. प्रलय कूप की ५१४. श्री चित्रकूट धाम की ५१५. चित्रकूट पर्वत की ५१६. कामतानाथ की ५१७. कामदगिरि की ५१८. मुखारबिन्दु की ५१९. यज्ञवेदी की ५२०. श्रीलक्ष्मणपहाड़ी की ५२१. श्री भरतमिलाप की ५२२. चारो भाईन की ५२३. पयसरनी की ५२४. मन्दाकिनी गंगा की ५२५. अनुसुइया माता की ५२६. अत्रि मुनि की ५२७. दत्तात्रेय भगवान की ५२८. चन्द्रमा मुनी की ५२९. गुप्त गोदावरी की ५३०. मड़फा पहाड़ की ५३१. माण्डव्य रिषी की ५३२. व्यास कुण्ड की ५३३. सूर्यकुण्ड की ५३४. सिद्धेश्वर महादेव की ५३५. देव अंगनातीर्थ की ५३६. बाँके सिद्ध की ५३७. हनुमान धारा की ५३८. जानकी कुण्ड की ५३९. स्फटिक शिला की ५४०. श्रीरामवन की ५४१. श्री बनवासी राम की ५४२. श्री अयोध्या नाथ की ५४३. श्री अयोध्याधाम की ५४४. श्री अयोध्यादेवी की ५४५. राजाराम भगवान की ५४६. श्रीसीतामहारानी की ५४७. चारो भाइयों की ५४८. चारों महारानियों की ५४९. तीनों

माताओं की ५५०. श्री चक्रवर्ती महाराज की ५५१. श्री सरयू मइया की ५५२. सहस्त्र धारा की ५५३. सप्तसागर की ५५४. सप्त ऋषियों की ५५५. श्री नागेश्वरनाथ की ५५६. श्रीक्षीरेश्वरनाथ ५५७. श्रीगोलाघाट की ५५८. श्री ऋणमोचन घाट की ५५९. श्री चक्रतीर्थ की ५६०. श्री मनोरमा गंगा की ५६१. मखौड़ा ग्राम की ५६२. श्री रामेश्वर महादेव की ५६३. द्वारिकानाथ की ५६४. जगन्नाथ भगवान की ५६५. बद्रीनाथ भगवान की ५६६. श्री गंगोत्री गंगा की ५६७. श्री गौमुख गंगा की ५६८. जमुनोत्री मइया की ५६९. श्री केदार नाथ की ५७०. श्री गौरीकुण्ड की ५७१. श्रीतप्तकुण्ड की ५७२. श्री ब्रह्मकपाली की ५७३. श्रीचारधाम की ५७४. चौरासी अड्डा की ५७५. अनन्त कोटि वैष्णव की ५७६. बावन द्वारे की ५७७. दिगम्बर अखाड़े की ५७८. जगत्गुरु श्री रामानन्दाचार्य ५७९. चारि सम्प्रदाय की ५८०. श्री सम्प्रदाय की ५८१. समस्त पूर्वाचार्यों की ५८२. कुठारी भगवान की ५८३. रसोइया-पुजारी की ५८४. स्थान पुरुष की ५८५. दाता-भोक्ता की ५८६. भण्डारा देने वाले की, ५८७. अन्नपूर्णा देवी की ५८८. श्रीसीतारामजी के महाप्रसाद की।

दोहा—राम कहे सुख ऊपजे, कृष्ण कहे दुख जाय।
महिमा महाप्रसाद की, पाइए सन्तों प्रेम लगाए॥
बोलिए सन्तों मधुरी-सी बानी प्रेम से श्री हरे॥

॥इति चारो धाम की बड़ी जय सम्पूर्ण॥

श्री संतो कर्म प्रकाश

१. नित्य प्रातः उठते समय प्रार्थना करें—

श्लोक—कराग्रे बसते लक्ष्मी, कर मध्ये सरस्वती।
कर मूले तू गोविन्द, प्रभाते कर दर्शनम्॥

२. पृथ्वी देवी को नमस्कार करने का मन्त्र्—

श्लोक—समुद्र बसने देवि, पर्वत स्तनमण्डिते।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं, पाद स्पर्शं क्षमस्व में॥

३. जल लेने का मन्त्र्—

श्लोक—ॐसलिलस्य मुखं दृष्टवा, विष्णु रूपं नमस्तुते।
क्रियार्थ महं गृहणामि, आपो देवः पुनातु माम्॥

४. डोल डाल जाने का मन्त्र्-

श्लोक—उत्तिष्ठन्तु सुराः सर्वे यक्ष गन्धर्व किन्नराः।
पिशाचा गुह्यकाश्चैव, मलमूत्र करोम्यहम्॥
यस्य यस्य च देवानां भूत प्रेत पिशाचकः।
मल मूत्र मनुष्याणां, मम दोषो न दीयते॥

५. गुदा चक्र शौच मंत्र-

श्लोक—यस्य गुदा द्वारं मुहुः पवित्रं जल निर्मलम्।
करतल कर मज्यते गुदा शौच भवेतशुचिः॥

६. मृत्तिका खोदने का मंत्र-

श्लोक—येनत्वां खनति ब्रह्मा येन त्वां रुद्र केशवः।
तेन त्याहं खनिस्यामि शुद्धार्थ कर पादयोः॥

७. हाथ पैर शुद्धि मंत्र-

श्लोक—अश्वक्रान्ति रथक्रान्ति विष्णु क्रान्ति बसुन्धरे।
मृत्तिके हर मे पापं यन्मया पूर्व संचितम्॥

८. प्रभाती उतारने का मन्त्र—

श्लोक—आयुर्बल यशोबर्चः प्रजा पशु वसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां तन्नो देहि वनस्पते॥

९. प्रभाती करने का मंत्र—

श्लोक—दन्त रूपं मधो गयं दन्त धावन मुत्फलम्।
कुर्वन्ति च त्रयो देव मम दोषो न दीयताम्॥

१०. स्नान संकल्प—

ॐ पुराण पुरुषोत्तमाय ब्रह्मणे नमः अद्य श्री ब्रह्मणे द्वितीय परार्धे श्री स्वेत बाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूदीपे भरतखण्डे आर्यावर्ते, अमुक देशे, अमुक क्षेत्रे, अमुक सम्वत सरे, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुकतिथौ, अमुक वासरे, अमुक नक्षत्रे, अमुक तीर्थे अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं, अमुक भगवत दासोऽहं, श्री सीताराम प्रीत्यर्थे कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक ज्ञाताज्ञात सकल दोष परिहारर्थे प्रातः काल व मध्याह्नकाल वा सन्ध्याकाल, स्नानं करिष्ये॥१०॥

११. तीर्थ आवाहन मन्त्र—

श्लोक—ॐ ब्रह्माण्डोदरे तीर्थाणि करे सपृहदानी तेरवे।
तेन सत्येन देव तीर्थ देहि दिवाकर॥
गंगा च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धु कावेरी जलेऽमिन्सन्निधिंकुरु॥

१२. वस्त्र पवित्र करने का मन्त्र—

श्लोक—ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स वाह्यभ्यन्तरः शुचिः॥

१३. सूर्य भगवान को अर्घ्य देने का मंत्र—

श्लोक—एहि सूर्य! सहस्रांशो! तेजोराशे! जगत्पते!
अनुकम्पय मां भक्त्यां गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

भगवान की पूजा विधि

१. तुलसी उतारने का मंत्र—

श्लोक—तुलसी हेम रूपेण विष्णु रूपेण मन्जरी।
विष्णु कार्यार्थ छिन्दामि मम दोषो न दीयते॥

२. गरुड़ घण्टी का मंत्र—

श्लोक—सर्वनाद मयी घण्टी देव देवस्य बल्लभा।
त्वन्निनादं सर्वेषां शुभं भवति शोभने॥

३. शंख का मंत्र—

श्लोक—त्व पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृता करे।
नमन्ति सर्व देवास्तु पाञ्चजन्यं नमोस्तुते॥

४. श्री ठाकुर जी को (उत्थापन) जगाने का मंत्र—

श्लोक—उत्तिष्ठो त्तिष्ठ भद्रं ते उत्तिष्ठ जगदीश्वर।
त्वयि उत्थायमानेतु उत्थितुं भुवत्ति त्रयम्॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ श्रीराम उत्तिष्ठ जानकी पते।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक मंगलं कुरु॥

५. आवाहन मंत्र—

श्लोक—आगच्छ भगवान विष्णु स्वस्थाने परमेश्वर।
अहं पूजा करिष्यामि सदा त्वं सन्मुखो भव॥

६. आसन मन्त्र—

श्लोक—सिंहासने सुवर्णस्य नाना रत्नोप शोभिते।
अनन्त फण पत्रस्य उपविश्यासने प्रभो॥

७. पाद्य देने का मंत्र—

श्लोक—स्नानार्थ स्वगच्छतोयानि गंधपुष्पयुतानि च।
पादं गृहाण देवेश, भक्त अनुग्रह कारक॥

८. अर्घ्य देने का मंत्र—

श्लोक—शंख तोयं समानीतं गंध पुष्पादि वासितम्।
अर्घ्यं गृहाण देवेश प्रीत्यर्थ सदा प्रभे॥

९. पंचामृत स्नान मंत्र—

श्लोक—दधि दुग्धं मधुः सर्पिः सर्करा च तथा प्रभो।
समर्पयामि देवेश प्रीत्यर्थ प्रतिगृह्यताम्॥

१०. जल स्नान मन्त्र—

श्लोक—गंगा सरस्वती तापी पयोष्णी नर्मदार्कजा।
तज्जलैः स्नापिता देव तेन शान्ति कुरुष्व मे॥

११. वस्त्र धारण मंत्र—

श्लोक—शीत वातोष्ण संत्राणं पर लज्जा निवारणम्।
सुवेषं धारितं यस्माद्वाससी प्रति गृह्यताम्॥

१२. यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र्—

श्लोक—ब्राह्मणं निर्मितं सूत्र विष्णु ग्रन्थि समन्वितम्।
इदं यज्ञोपवीतं च गृह्यताम तु जनार्दन॥

१३. आभूषण धारण करने का मन्त्र—

श्लोक—किरीटं कुण्डलं हारं कंकणांगद नूपुरम्।
नाना रत्नमयं त्वंगे भूषण प्रति गृह्यताम्॥

१४. चन्दन अर्पण करने का मन्त्र्—

श्लोक—मलयाचल संभूतं शीतमानन्द वर्धनम्।
काश्मीर धनसाराढ्य चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

१५. तुलसी अर्पण करने का मन्त्र—

श्लोक—युग्म पत्राभ्यां संयुक्तां मञ्जरी मध्य संस्थिताम्।
ददामि राम प्रीत्यर्थ गृहाण जगदीश्वर॥

१६. पुष्प अर्पण करने का मन्त्र—

श्लोक—नाना बिधानि पुष्पाणि ऋतु कालोम्द्वानि च।
मयार्पितानि सर्वाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यतम्॥

१७. धूप देने का मन्त्र—

श्लोक—वनस्पति रसोद्भूतं सुगन्धाढ्यो सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

१८. दीप दिखाने का मन्त्र—

श्लोक—घृतवर्ति समायुक्तं तथा कर्पूर संयुतम्।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक तिमिरापऽहम्॥

१९. नैवेद्य लगाने का मन्त्र—

श्लोक—अन्नं चतुर्बिधं स्वाद रसैः षडभिः समन्वितम्।
भक्ष्यं भोज्यं समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

२०. अर्घ्य देने का मन्त्र—

श्लोक— श्री सीतारामाभ्यां नमः। श्री रामभद्राय नमः।
श्रीरामचन्द्राय नमः॥

२१. जल अर्पण करने का मन्त्र—

श्लोक—गंगा तीर्थं नदीनां तु सुगन्धाढ्यं सुनिर्मलम्।
पानार्थमुदकं पुण्यं गृहाण जगदीश्वर॥

२२. ताम्बूल अर्पण करने का मन्त्र—

श्लोक—नाग वल्ली दलं दिव्यं चूर्ण खादिर संयुतम्।
वक्त्र सौरभ्य कृत्स्वादु ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

२३. तीन बार आचमन करावें—

श्लोक—श्री सीतारामाभ्यां नमः। श्री रामभद्राय: नमः।
श्री रामचन्द्राय नमः॥

२४. आरती करने का मन्त्र—

श्लोक—सुदीप्त घृतकर्पूरं पूरितं सप्त वर्तिकम्।
आर्तिक्यं देव देवेश संगृहाण मध्यार्पितम्॥

२५. आरती करने की विधि—

श्री चरण कमलों में चार बार, नाभि में दो बार मुखारबिन्द में एक बार तथा सर्वांग में सात बार, कुल मिलाकर चौदह आरती उतारें।

दोहा—चारि चरण युग देश कटि मुख मण्डल एक बार।
सातबार सर्वांग में येहि विधि आरती उतार॥

पढ़ो समझो और करो

वैष्णव के चिह्न—(पद्मपुराण)

श्लोक—आद्यस्तु वैष्णवः प्रोक्ताः धनुर्वाणांकितो हरेः।
तुलसी योर्ध्वपुण्ड्राणां तन्मन्त्राणां परिग्रहः॥

अर्थ—जिसके गले में तुलसी की माला हो गुरु के द्वारा रामकृष्णादि मन्त्र प्राप्त किया हो, और धनुष वाणादि जिसकी भुजाओं में अंकित हैं ऐसे वीर पुरुष को वैष्णव कहते हैं।

२८. गुरु दीक्षा के बिना सब व्यर्थ हैं।

श्लोक—आदिक्षितताये कुर्यन्ति जप पूजादिकाः किया।
न फलाति प्रिय तेषां शिलाया गुप्त बीजवत्॥

अर्थ—भगवान शिव कहते हैं हे पार्वती! अदीक्षित अर्थात् गुरु किये बिना मनुष्य जो जप तप पूजादिक कर्म करता है व पत्थर में बीज बोने के समान सब व्यर्थ है। (पदम पुराण स्रष्टी खण्ड) ॥२८॥

गुरु कैसा बनाना चाहिए—

श्लोक—गुरुः निर्मल शान्तात्मा साधवोमितभाषिणः।
काम क्रोध विनिर्मुक्तः सदाचार जितेन्द्रियः॥२९॥

अर्थ—जिसकी बुद्धि पवित्र हो शान्त स्वभाव, साधवों चित आचरण वाला हो, बोले थोड़ा किन्तु हितकर वचन कहने वाला हो, काम क्रोधादि दोषों से मुक्त हो, ऐसा गुरु बनाना चाहिए॥२९॥

श्री गुरु महाराज जी के द्वारा जो राममन्त्र प्राप्त किया हुआ, नित्य जपते हैं वे परम पद को प्राप्त होते हैं।

मन्दिर में जाने का माहात्म्य

श्लोक—हरि मन्दिरमालक्ष्य यदि गच्छेत् शनैः शनैः।
पदे पदेऽश्वमेधस्य फलमाप्नोति मानवः॥

अर्थ— भगवान के मन्दिर में जाने के विचार से मनुष्य जितने पग आगे बढ़ता है, उतने अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है। (तौ पादौ सफलं, उनके पैर सफल होते हैं। (स्कन्दपुराण) ॥३०॥

भगवान के दर्शन का माहात्म्य—

श्लोक—दर्शनस्य माधवस्यापि भस्मी भवति पातकः।
आजन्म संचितान्याय मोचियिष्यति तन्मुनेः॥

अर्थ—हे मुनि भगवान के दर्शन से वर्तमान और अनेक जन्म के पाप भस्म हो जाते हैं॥३१॥

श्लोक—सकर्ता सर्व धर्माणां येन पश्यति केशवः।

अर्थ—अर्थात् वही सब धर्मों का कर्त्ता है जो भगवान के दर्शन करता है॥३२॥

प्रदक्षिणा माहात्म्य

श्लोक—हरि प्रदक्षिणे प्राज्ञो यदि गच्छेत् शनैः शनैः।
पदे पदेऽश्वमेधस्य फल प्राप्नोति मानवः॥३३॥

अर्थ—भगवान की प्रदक्षिणा में प्राणी जितने पैर उठाते हैं पग पग पर अश्वमेध यज्ञ का फल होता है।

भगवान को दण्डवत करने का फल

अर्थ—भगवान को जो दण्डवत करते हैं, उनके साथ उनके पाप भी पृथ्वी पर गिर जाते हैं, फिर उनके साथ पाप नहीं उठते।

भगवान को दण्डवत करते समय जितने रजकण शरीर में लगते हैं उतने हजार वर्ष तक वे मनुष्य भगवान के लोक में निवास करते हैं।

चरणामृत का माहात्म्य

अर्थ—भगवान के चरणामृत को जो क्षणभर भी मस्तक पर धारण करता है, उसे तत्काल ही सब तीर्थों के स्नान का फल मिलता है और वह भगवान को प्रिय होता है। ध्यान रहे बाँये हाथ पर वस्त्र रखकर उसके ऊपर दाहिने हाथ में चरणोदक लेवें ताकि पृथ्वी पर न गिरने पावे।

नम्रता से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है

श्लोक—विनयाल्लभते धर्मं विनयाल्लभते यशः।
विनयाल्लभते वित्तं विनयात्किं न लभ्यते॥पद्मपु०॥

अर्थ—विनय से धर्म यश धन की प्राप्ति होती है। ऐसी कौन वस्तु है, जो विनय से न प्राप्त हो।

मन्दिर में बहारू लगाने का माहात्म्य

अर्थ—भगवान के मन्दिर में बहारू लगाने से जितने धूल कण उड़ते हैं उतने हजार युग वह भगवान के लोक में निवास करते हैं।

मन्दिर में चौका लगाने का माहात्म्य

अर्थ—भगवान के मन्दिर बहारने के बाद जो लीपते हैं वह सब पापों से मुक्त हो भगवान के धाम को प्राप्त होते हैं।

भगवान की सेवा पूजा का फल

अर्थ—हे द्विज जो एक बार भी भक्ति भाव से भगवान का भजन करते हैं, भगवान उनको अपना धाम दे देते हैं क्योंकि भगवान भक्त के आधीन हैं।

आरती करने और लेने का माहात्म्य

अर्थ—जो व्यक्ति कपूर के साथ भगवान की आरती करता है वह सब कुल समेत मुक्ति पाता है, जो कोई आरती लेकर अपने शरीर में स्पर्श करते हैं, उनको लाखों हजारों यज्ञों का फल प्राप्त होता है।

घड़ी घण्टादि बजाने का फल

श्लोक—मृदंग बादन युतं पनवैन समायुतम्।
अर्पणं बासुदेवस्य प्रत्यक्षं मोक्षदा नृणाम्।
कास्यञ्च करतालञ्च वेणु वादयते तु यः।
अन्ते विष्णुपुरं गत्वा विष्णुना सह मोदते॥ ३५ ॥

अर्थ—भगवान की आरती के समय जो मृदंग, ढोल, झाल, घण्टा, घड़ी, करताल, मञ्जीरा, झांझ, वंशी, आदि बजाते हैं, वे प्रत्यक्ष मोक्ष के भागी होते हैं और भगवान के लोक में जाकर भगवान के साथ आनन्द करते हैं। जो गाना गाते नृत्य करते बाजे बजाते संगीत-पाठ करते हैं, वे भगवान को प्रिय होते हैं॥ ३५ ॥

मन्दिर में नृत्यगान करने का माहात्म्य

श्लोक—विसृज्य लज्जां योऽधीते नृत्यते गायतेऽपि च।
कुलकोटि समायुक्तो लभते मामकं पद्म॥ ३६ ॥

विष्णु पुराण से-अर्थ—भगवान कहते हैं कि झूठी लोक-लज्जा को त्यागकर प्रेमपूर्वक जो मेरे सामने नाचते गाते हैं वे अपने करोड़ों कुल के सहित मेरे धाम को प्राप्त होते हैं।

भगवान को पंखा करने का फल

अर्थ—गर्मी के दिनों में जो ताड़-पत्र या पवित्र वस्त्र के पंखे से भगवान को हवा करते हैं, वे भगवान के धाम को प्राप्त होते हैं।

दर्पण दान का माहात्म्य

अर्थ— जो भगवान को दर्पण दान करते हैं वह रूपवान होते हैं और भगवान को सिंगार के बाद जो दर्पण दिखाते वे कभी भाग्यहीन नहीं होते।

जो भगवान को किरीट मुकुट कुण्डल अर्पण करते हैं वे चौदह इन्द्र तक भगवान की पुरी में निवास करते हैं।

मन्दिर जीर्णोद्धार का माहात्म्य

श्लोक—मूलाच्छत गुणं पुण्यं प्राप्नुयाज्जीर्ण कारकः।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन जीर्णस्योद्धारमाचरेत्॥ ३७॥

अर्थ—नवीन मन्दिर की अपेक्षा जो पुराने मन्दिर का जीर्णोद्धार करते हैं उन्हें सौगुना अधिक पुण्य प्राप्त होता है। अतएव जीर्ण मन्दिर का प्रयत्नपूर्वक उद्धार करना चाहिए। भगवान का कर्य समझकर पंचपात्रादि माँजना, चवंर करना पंखा करना फूल तुलसी लगाना, श्रृंगार सामग्री तैयार करना, माला बनाना, नैवेद्य तैयार करना, चन्दन उतारना आदि भगवान को का कार्य नियम पूर्वक करने से भगवान के कृपापात्र होते हैं और भगवान के धाम में उनका निवास होता है। इसमें किंचित भी संदेह नहीं है। पूर्णश्रद्धा और दृढ़ भक्ति के बिना कोई भी कार्य सफल नहीं होता है।

पद्मपुराण श्लोक—

पुरतो वासुदेवस्य दण्डवत पतितो भुवि।
पतन्ति पातकान्सर्वे नोतिष्ठन्ति पुनस्त्वह॥
यावद्रेणुभिन्नृणां भूषित स्यात्कलेवरम।
तावत्कल्प सहस्राणि तिष्ठन्ति हरि सन्निधौ॥

रामलला नहछू/सोहर छन्द

आदि शारदा गनपति गौरि मनाई हो।
रामलला कर नहछू गाई सुनाई हो॥
जेहि गाये सिधि होय परम निधि पाइय हो।
कोटि जन्म कर पातक दूरि हो जाइय हो॥
कोटिन्ह बाजन बाजहिं दशरथ के गृह हो।
देवलोक सब देखहिं आनन्द अति हिय हो॥१॥

नगर सोहावन बरनि न जातै हो।
कौशिल्या के हरष न हृदय समाते हो॥२॥
आलहिं बांस को मांड्व मनिगन पूरन हो।
मोतिन्ह झालरि लगि चहूँदिशि झूलन हो॥
गंगाजल कर कलश तो तुरति मंगाइय हो।
जुवतिन्ह मंगल गाइ रामअन्हवाइय हो॥३॥
गजमुकता हीरामनि चौक पुराइय हो।
देहु सुअरघ राम कहं लेइ बैठाइय हो॥
कनक खम्भ चहुँ ओर मध्य सिंहासन हो।
मानिकदीप बराय बैठि तेहि आसन हो॥४॥
बनि बनि आवति नारि जानि गृह मागन हो।
बिहँसित आई लोहारिनि हाथ बरायन हो॥
अहिरिन हाथ देहहि सुमन लेइ आवइ होय।
उनरत जोवनु देखि नृपति मन भावइ हो॥५॥
रूप सलोनी तँबोलिन बोरा हाथहिं हो।
जाकी ओर बिलोकहि मन तेरि साथहिं हो॥
दरजिनि गोरे गात लिहे कर जोरा हो।
केसरि परम लगाइ सुगन्धन बोरा हो॥६॥
मोचिनि बदन सकोचिनि हीरा माँगत हो।
पनहिं लिहे कर शोभित सुन्दर आँगन हो॥
बतिया सुधरि मलिनिया सुन्दर।
कनक रतनमनि मौरि लिहे मुसुकातहि हो॥७॥
कटि कै छबि बरिनिया छाता पानिहि हो।
चन्दबदनि मृगलोचनि सब रस खानिहिं हो॥

नैन विशाल नउनिया भी चमकावइ हो।
देइ गारि रनवासहिं प्रभु दत्त गावइ हो॥८॥
कौशिल्या की जेठि दीन्ह अनुशासन हो।
नहछू जाइ करावहु बैठि सिंहासन हो॥
गोद लिये कौशिल्या बैठि राहि बर हो।
सोभित दूलह राम सीता हर आँचर हो॥९॥
नाउनि अति गुनखानि तो बेगि बोलाई हो।
करि सिंगार अति लोन तौ बिहसति आई हो॥
कनक चुनिन सो लसित नहरनी लिय कर हो।
आनन्द हिय न समाइ देखि समहिं वर हो॥१०॥
कानन कनक तरीवन बेसारि साइह हो।
गज मुकुता कर हार कंठमनि सोहइ हो॥
कर कंकन कटि किंकिनी नुपूर वजाई हो।
सुनि के दीन्हीं सारी अधिक बिराजइ हो॥११॥
कहि रामुजीव साँवर लक्ष्मिन गोर हो।
कीघहुँ राजि कौसिलहिं परिगा भोर हो॥
राम अहहिं दशरथ के लक्ष्मन आनक हो।
भरत शत्रुघ्न भाइ तो श्रीरघुनाथ क हो॥१२॥
आजु अवधपुर आनन्द नहछू राम कहो।
चलहु नयन भरि देखिय सोभाधाम कहो॥
अति बड़भाग नउनियाँ छुऐ नख हाँथ सो हो।
नैनन्ह करति गुमान तौ श्रीरघुनाथ सोहो॥१३॥
जो पगु नाउनि धोवइ राम धोवावई हो।
सो पगु धूरि सिद्ध मुनि दरस न पावई हो॥

अतिसय पुहुँप कमाल राम उर सोहइ हो।
तिरछी चितवनि आनन्द मुनिमुख जोहइ हो॥१४॥
नख काटत मुसुकाहिं नहिं जातहि हो।
पदुम राग-मुनि मानहूँ कोमल गातहिं हो॥
नावक रुचि के अँगुरियन्ह मृदुल सुगारी हो।
प्रभुकर चरन प्रछातल अति सुकुमारी॥१५॥
भइ निवछावरि बहु विधि जो जस लायक हो।
तुलसीदास बलि जाऊ देखि रघुनायक हो॥
राजन दीन्हे हाथी रानिन्ह हार हो।
भरिगे रतन पदारथ सूप हजार हो॥१६॥
भरि गाड़ी निवछावरिनाऊ जेइ आवइ हो।
परिजन करहिं निहाल असीसत आवइ हो॥
तापर करहिं सुभौज बहुत दुख खोबहिं हो।
होइ सुखी सब लोग अधिक दुख खोबहिं हो॥१७॥
गावहिं सब रनिवास देहि प्रभु गारी हो।
राम लाल सकुचाहिं देखि महतारी हो॥
हिलमिल करत सवाँग समा रस केलि हो।
नाउनि मन हरषाई सुगन्ध मेल हो॥१८॥
दूलह के महतारी देखिं मन हरषइ हो।
कोटिन्ह दीन्हेउ दान मेघ जनु बरषइ हो॥
रामलला कर नहछू अति सुख गाइय हो।
जेहि गाय सिधि होय परमानिधि पाइय हो॥१९॥
दशरथ राम सिंहासन बैठि बिरजहिं हो।
तुलसीदास बलि जोहि देखि रघुराजहिं हो॥

जे यह नहछू गावै गाइ सुनवाइ हो।
ऋषि सिद्धि कल्याण मुक्ति नर पावई हो ॥२०॥

श्री सीताराम

सीताराम सीताराम सीताराम क़हिये।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये॥
मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में।
तू अकेला नहिं प्यारे राम तेरे साथ में।
विधि का विधान जान हानि लाभ रहिये॥
सीताराम.................. ॥

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा।
होगा प्यारे वही जो श्री राम जी को भायेगा।
फल आशा त्याग शुभ काम करते रहिये॥
जाहि विधि राखे............. ॥

जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीना नाथ के।
महलों में राखे चाहे झौंपड़ी में वास दे।
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये॥
जाहि विधि राखे............ ॥

आशा एक राम जी से दूजी आशा छोड़ दे।
नाता एक राम जी से दूजा नाता तोड़ दे।
साधु संग राम रंग अंग अंग रंगिये।
काम रस छोड़ प्यारे राम रस पगिये।
जाहि विधि राखे............ ॥

सन्तवाणी–सत्य ज्ञानमृत

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पांय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय॥१॥
गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोष।
गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मिटै न दोष॥२॥
अबुध सुबुध सुत मातु पितु, सबहिं करै प्रतिपाल।
अपनी ओर निबाहिये, सिख सुत गहि निज चाल॥३॥
चारि खानि में भरमता, कबहु न लगता पार।
सो फेरा सब मिटि गया, सत्‌गुरु के उपकार॥४॥
जग में युक्ति अनूप है, साधु संग गुरु कान।
तामे निपट अनूप है, सतगुरु लागा ज्ञान॥५॥
गुरु लोभी शिष लालची, दोनों खेल दाँव।
दोनों बूड़े बापुरे, चढ़ि पाथर की नाँव॥६॥
गुरु गुरु में भेद है, गुरु गुरु में भाव।
सोइ गुरु नित बन्दिये, शब्द बतावे दाव॥७॥
सो गुरु निसदिन बन्दिये, जासों पाया राम।
नाम बिना घट अंध है, ज्यों दीपक बिन धाम॥८॥
गुरु नाम है गम्य का, शीष सीख ले सोय।
बिनु पद बिनु मरजाद नर, गुरु शीष नहिं कोय॥९॥
गुरु तो ऐसा चाहिए, शिष्य सों कछू न लेय।
शिष्य तो ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ देय॥१०॥
गुरु कीजै जानि के, पानी पीजै छानि।
बिना बिचारे गुरु करे, परै चौरासी खानि॥११॥

जैसा ढूँढत मैं फिरूँ, तैसा मिला न कोय।
ततवेता तिरगुन रहित, निरगुन सों रत होय॥१२॥
साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहिं।
धन का भूखा जो फिरै, सो तो साधु नाहिं॥१३॥
बिरछा कबहुँ न फल भखै, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर॥१४॥
जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥१५॥
तीरथ न्हाये एक फल, साधु मिले फल चार।
सतगुरु मिले अनेक फल, कहैं कबीर विचार॥१६॥
साधु कहावन कठिन है, ज्यों खांड़े की धार।
डगमगाया तो गिर पड़े, निहचल उतरे पार॥१७॥
साधु कहावन कठिन है, लम्बा पेड़ खजूर।
चढ़ै तो चाखे प्रेम रस, गिरै तो चकनाचूर॥१८॥
आसन तो एकान्त करैं, कामिनी संगत दूर।
शीतल संत शिरोमनी, उनका ऐसा नूर॥१९॥
यह कलियुग आयो अबै, साधु न मानै कोय।
कागी क्रोधी मसखरा, तिनकी पूजा होय॥२०॥
बाना पहिरे सिंह का, चलै भेड़ की चाल।
बोली बोले सियार की, कुत्ता खावै काल॥२१॥
माला तिलक लगाय के, भक्ति न आई हाथ।
दाढ़ी मूंछ मुडाय के, चले दुनी के साथ॥२२॥
तन को जोगी सब करै, मन को करै न कोय।
सहजै सब विधि पाइये, जो मन जोगी होय॥२३॥

मन मैला तन ऊजरा, बगुला कपटी अंग।
तासौं तो कौवा भला, तन मन एकहि अंग॥२४॥
बोली ठोली मसखरी, हंसी खेल हराम।
मद माया औ इस्तरी, नहिं सन्तन के काम॥२५॥
घर में रहै तो भक्ति करु, नातर करु बैराग।
बैरागी बन्धन करै, ताका बड़ा अभागा॥२६॥
मांगन मरण समान है, तोहि दई मैं सीख।
कहैं कबीर समुझाय के, मति कोई माँगै भीख॥२७॥
माँगन गये सो मर रहे, मरै जु माँगन जांहि।
तिनतैं पहले वे मरे, होत करत हैं नाहिं॥२८॥
जा घर गुरु की भक्ति नहीं, संत नहीं मिहमान।
ता घर जम डेरा दिया, जीवत भये मसान॥२९॥
मथुरा काशी द्वारिका, हरिद्वार जगन्नाथ।
साधु संगति हरिभजन बिन, कछु न आवै हाथ॥३०॥
ऊँचे कुल कह जनमिया, करनी ऊँच न होय।
कनक कलश मद सो भरा, साधुन निन्दा सोय॥३१॥
जीवन जोबन राज मद, अविचल रहै न कोय।
जु दिन जाय सत्संग में, जीवन का फल सोय॥३२॥
जब लग नाता जाति का, तब लग भक्ति न होय।
नाता तोड़े गुरु भजै, भक्त कहावै सोय॥३३॥
प्रेम बिना जो भक्ति है, सो निज दंभ विचार।
उदर भरन के कारन, जन्म गँवाये सार॥३४॥
कामी क्रोधी लालची, इनते भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय॥३५॥

तिमिर गया रवि देखते, कुमति गयी गुरु ज्ञान।
सुमति गयी अति लोभते, भक्ति गयी अभिमान॥३६॥
प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जो रुचै, शीश देय ले जाय॥३७॥
जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु हैं मैं नाहिं।
प्रेम गली अति सांकरी, तामें दो न समाहिं॥३८॥
आठ पहर चौसठ घड़ी, लागि रह अनुराग।
हिरदै पलक न बीसरे, तब साँचा बैराग॥३९॥
प्रेम पंथ में पग धरै, देत न शीश डराय।
सपने मोह व्यापे नहिं, ताको जन्म नशाय॥४०॥
राम जपत कुष्टी भला, चुइ चुइ पैर जु चाम।
कंचन देह किस काम की, जो मुख नाहीं राम॥४१॥
राम जपत दरिद्री भला, टूटी घर की छान।
कंचन मन्दिर जारि दे, जहाँ न सतगुरु ज्ञान॥४२॥
कोटि नाम संसार में, ताते मुक्ति न होय।
आदि नाम जो गुप्त जप, बिरला जाने कोय॥४३॥
राम नाम निज औषधि, सतगुरु दई बताय।
औषधि खाय अरु पथ रहै, ताकी बेदन जाय॥४४॥
जाकी गांठी राम है, ताके हैं सब सिद्धि।
कर जोड़े ठाढ़ी सबै, अष्ट सिद्धि नव निद्धि॥४५॥
सुख के माथे शिल परै, राम हृदय से जाय।
बलिहारी या दुःख की, पल पल राम रटाय॥४६॥
लेने को गुरु नाम है, देने को अन दान।
तरने को आधीनता, बूड़न को अभिमान॥४७॥

माला फेरत युग गया, मिटा न मन का फेर।
करका मनका डारिदे, मनका मनका फेर॥४८॥
माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख मांहि।
मनवा तो चहुँ दिशि फिरै, यह तौ सुमिरन नांहि॥४९॥
क्रिया करै अंगुरि गिनै, मन धावै चहुँ ओर।
जिहि फेरै सांई मिलै, सो भय काठ कठोर॥५०॥
जो तोको कांटा बुवै, ताहि बुवै तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वाको है तिरशूल॥५१॥
दुरबल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
बिना जीव की साँस से, लोह भस्म ह्वै जाय॥५२॥
या दुनिया में आय के, छांडि देय तू ऐंठ।
लेना है सो लेय के, उठि जात है पैंठ॥५३॥
खाय पकाय लुटाय के, करि ले अपना काम।
चलती बिरिया रे नरा, संग न चलै छदाम॥५४॥
ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय॥५५॥
जग में बैरी कोय नहीं, जो मन शीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करे सब कोय॥५६॥
राम नाम सुमिरन करै, सतगुरु पद निज ध्यान।
आतम पूजा जीव दया, लहै सो मुक्ति अमान॥५७॥
जो जल बाढ़े नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानों काम॥५८॥
मरेंगे मरि जायेंगे, कोय न लेगा नाम।
ऊजड़ जाय बसाहिंगे, छोड़ि बसन्ता गाम॥५९॥

एक दिन ऐसा होयगा, सब सों परै बिछोह।
राजा रानी राव रंक, सावध क्यों नहिं होय॥६०॥
हाड़ जरै ज्यौं लाकड़ी, केस जरै ज्यों घास।
सब जग जरता देखि करि, भये कबीर उदास॥६१॥
पानी केरा बुदबुदा, इस मानुष की जात।
देखत ही छिप जायेंगे, ज्यौं तारा प्रभात॥६२॥
रात गंवाई सोय कर, दिवस गंवायो खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय॥६३॥
काल करै सो आज कर, आज करै सोब अब।
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब॥६४॥
राम नाम जाना नहीं, पाला सकल कुटुम्ब।
धन्धा ही में पचि मरा, बार भई नहिं बुम्ब॥६५॥
कहा किया हम आयके, कहा करेंगे जाय।
इत के भये न ऊत के, चालू मूल गँवाय॥६६॥
आयें हैं ते जायेंगे, राजा रंक फकीर।
एक सिंघासन चढ़ि चले, एक बांधे जात जंजीर॥६७॥
एक दिन ऐसा होयगा, कोय काहु का नांहि।
घर की नारी को कहै, तन की नारी जांहि॥६८॥
चले गये सो ना मिले, किसकी पूंछु बात।
मात पिता सुत बान्धवा, झूठ सब संघात॥६९॥
जंत्र मंत्र सब झूठ है, मति भरमो जग कोय।
सार शब्द जानै बिना, कागा हंस न होय॥७०॥
कर्म फंद जग फंदिया, जप तप पूजा ध्यान।
जाहि शब्द ते मुक्ति होय, सो न परा पहिचान॥७१॥

निज स्वारथ के कारनै, सेव करै संसार।
बिन स्वारथ भक्ति करै, सो भावै करतार॥७२॥
संसारी से प्रीतड़ी, सरै न एकौ काम।
दुविधा में दोनो गयें, माया मिली न राम॥७३॥
मरूँ पर माँगूं नहीं, अपने तन के काज।
परमारथ के कारनै, मोहि न आवै लाज॥७४॥

सीताराम के भजन

भजो हो मन सीताराम, मिटे दुखद्वंदना॥टेक॥
जाकी जगत भुलाया, ताताथोई, तंदना॥
ब्रह्मा जाको पार न पावै, गावै सनक सनंदना॥
देवकी के गृह में प्रभु आये, जैसे पूरण चन्द्रमा॥
सुर नर मुनि जाको ध्यान धरत हैं साधु करत हैं वंदना॥
हिरणाकुश नख उदर विदारे, श्री प्रहलाद को राखना॥
बलिराजा के द्वार पधारे, वेष धरे हैं वामना॥
मथुरा में हरि कंस पछारे लंकापति रावना॥
द्रुपदसुताको चीर बढ़ायो काली नागहि नाथना॥
औरन कूँ हरि ये टेढ़े हैं, नंद यशोदा लालना॥
साधुन को हरि ऐसे लागें, जैसे शीतल चांदना॥
भनत नामदेव सुनो सुलोचन साधू निंदक नाशना॥१॥

सुमिरो मन जय जय जय अवधेश॥टेक॥
अवध नगर कञ्चनपुर राजै बिहरत श्री सीतेश॥
भाल तिलक गल हीरा सोहे शिर घुँघरवाले केश॥
कटि पर पीत पीतांबर राजै रूप धरे नृप भेष॥

शुक सनकादि नारदमुनि गावैं सेवत शम्भु गणेश॥
सुर नर मुनि जय शब्द करतु हैं वरषत पुष्प हमेश॥
रामचरण रघुवीर को दरशन हरै मनोहर वेष॥२॥

वन से आवत चारों भैया॥टेक॥

दोउ श्यामल दोउ गौर मनोहर, नृप दशरथ के छैयां॥
वन ते आवत तुरंग नचावत, कर गहि कमल फिरैया॥
अवधपुरी नर नारि निहारैं, द्वौ कर लेत बलैया॥
विविध भांति आभूषण पहिरे मन्द मन्द मुसुकैया॥
रामलाल को रूप विलोके, कोटि काम छबि छैया॥
रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न, शोभा वरणि न जैया॥
अग्रदास प्रभु की छबि निरखत करत आरती मैया॥३॥

अयोध्या राजत भूमि कनक की॥टेक॥

रङ्ग भूमि राजत रघुनन्दन, सँग में सुता जानकी की॥
रवि शशि कोटि उदित हम देखे, जोरी बनी है बनत की।
रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न, सन्मुख हैं हनुमान बली।
मातु कौशल्या करत आरती, जय जय जय रघुवर की॥
ठुमक ठुमक महलन में बिहरैं, रुमक झुमक पग नुपूर की॥
कृपा निवास कहाँ लगि वरणौं महिमा श्री अवध नगर की॥४॥

भजो मन रामचरण सुखदाई॥टेक॥

निज चरणन ते निकसि सुरसरी, शंकर जटा समाई॥
जटाशंकरी नाम धरो है, त्रिभुवन तारण आई॥
जिन चरणन की चरण पादुका, भरत रहे लव लाई॥
सो केवट कठरी में धोइ लीनो तब हरि नाव चढ़ाई॥
दण्डकवन प्रभु पावन कीन्हों ऋषियन त्रास मिटाई॥
सो ठाकुर तीनों लोक के स्वामी, कपट मृगा संग धाई।

कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल, ता शिर छत्र चढ़ाई।
रिपु को अनुज विभीषण भेंटो परसत लंका पाई।
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, शेष सहस मुख गाई।
तुलसीदास मारुतसुत महिमा, हरि अपने मुख गाई ॥५॥

भजु मन कृष्णचरण सुखदाई ॥टेक॥

जिन चरणन की चरण पादुका, सिन्धुसुता मन लाई ॥
जय जय कृष्ण कमल दल लोचन, दुखमोचन सुखदाई।
जिन चरणन के अरस परस ते, थाह यमुन होई जाई।
नन्द भवन में जाय विराजे, यशुमति के सुखदाई।
सो पूरण वसुदेव देवकी, निरखि परम सुख पाई।
छूटे बन्द कपाट उघारे, देव सुमन झरि लाई।
पूतना परसि परम गति दीनो, गृहा देखि बिसराई।
गोवर्धन ब्रज राखि मनोहर, कालिनाग नथि ल्याई।
कुब्जा तो चन्दन घसि ल्याई, परस परम पद पाई ॥
उग्रसेन को राजतिलक दियो, जरासंध दुखदाई।
कुन्ती पुत्र बन्धु भय व्याकुल, ता शिर छत्र चढ़ाई ॥
विप्र सुदामा हरि पद भेंटे कंचनपुरी बसाई।
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, निगम नेति यश गाई ॥
चेतनदास संत के शरणै, पुलक नयन जल छाई ॥६॥

सांचे मन के मीता, रघुवर ॥टेक॥

कब सेवरी काशी को धाई, कब पढ़ि आई गीता ॥
जूँठे फल सेवरी के खाये, नेक लाज नेहिं कीता ॥
चरण छुअत तरि गई अहिल्या, गिद्धवराज गति कीता ॥
लंकापति को गर्व हरो है, राज विभीषण दीता ॥
मित्र सुग्रीव किये रघुनन्दन, वानर किये पुनीता ॥

सखा निषाद कन्द फल लायो, कीनो अधिक प्रतीता॥
सुफल यज्ञ मुनि जनक को कीनो, सब भूपन बल जीता॥
तुलसीदास छबि निरखि जानकी, मनवांछित फल लीता॥७॥

राम जपा सोई जीता जग में॥टेक॥

हाथ सुमिरनी बगल कतरनी, पढ़े भागवत गीता॥
हृदय शुद्ध कीन्हो नहिं अबहूँ कहत सुनत दिन बीता॥
आन देव की लज्जा कीनी, हरि से रहा अलीता॥
धन यौवन तेरो योंहि जायगो अंत समय चल रीता॥
बावरिया ने बावरि लूटी फन्दजाल सब कीता॥
कहत कबीर काल जो मारे, ज्यों मिरगा को चीता॥८॥

साधो भाई गगन घटा घहरानी॥ टेक॥

पश्चिम दिशा से उठी बदरिया पूरब ओर से पानी॥
चन्द्र सूर्य दोउ ईश बनाई, ज्योति कियो निरबानी।
अपनी अपनी ओर संभारो, बहि न जाय यह पानी॥
शील संतोष की करो बयारी ज्ञान कि बेल लगावो॥
दूब घास मदुरी उलटावो बोओ हर की घानी।
चिन्ता चेतन दोउ चौक में बैठे चूक न जाय मेरी बानी।
भृकुटी बाण हाथ कर राखो, गुरु गम गोलादानी॥
उपजा खेत रासि घर आई, आनन्द मङ्गल खानी॥
राजा वासे कबहुँ न बोलै, निर्भय भई किसानी॥
जिनको सतगुरु पूरो मिले हैं, तिन यह मारग जानी॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, राम नाम निज जानी॥९॥

मन रे, तू चित्रकूट बस भाई॥टेक॥

जहाँ राम सुखधाम जानकी, संग लक्ष्मण सुखदाई॥
पयसरणी पापन की हरणी, ताको क्यों न नहाई॥

जो गंगा देवन को दुर्लभ सो अनसूया माई॥
जो रज को ब्रह्मा शिव नारद मुनि खोजत मन लाई॥
जो पद रेणु सुरन को दुर्लभ, ले शिव शीश चढ़ाई॥
चित्रकूट द्रुम गुहा कन्दरा, जहाँ बिहरत रघुराई॥
राम कृपा भजु जानकी बल्लभ, और न आन उपाई॥१०॥
सन्त चरण चित लाई मन रे तू सन्त चरण चित लाई॥टेक॥
कलिमल हरण चरण सन्तन के सुमिरत होत सहाई॥
गंगा यमुना और सरस्वती, तीरथ सकल चले अन्हाई॥
जहँ जहँ चरण परत सन्तन के तहँ तहँ होत सहाई॥
संत चरण देखत जौ पावै, सात समुद्र फिरि आई॥
काम क्रोध मद लोभ विषय वश इनसों लेत छोड़ाई॥
सब मुनीन्द्र नारददि कवीश्वर वेद पुराणन गाई॥
शेष सहस मुख रटत निरन्तर महिमा तिन नहिं पाई॥
सूर अग्र सब सन्त आदि ले, तुलसीदास मन लाई॥
रामदास संतन की महिमा हरि अपने मुख गाई॥११॥
सन्तन के वश भाई, हरिजी सन्तन के वश भाई॥टेक॥
जाति वरण कुल जानत नाहीं लोग करैं चतुराई॥
शबरी जाति भिल्लिनी होती, बेर तोर के लाई॥
प्रीति जानि वाके फल खाये, तीनिउ लोक बड़ाई॥
कर्मा कौन अचारिन होती, हरिसों प्रीति लगाई॥
छप्पन भोग अरोगे प्रभु तुम पहिले खिचरी खाई।
नामा पीपा औ रैदासा, उनहुँ से प्रीति लगाई।
सैना भक्त को संशय मेटो, आप भये हरि नाई॥
सहस अठासी ऋषि मुनि होते, तबहुँ न शंख बजाई॥
कहत कबीर स्वाती के आये, शंख मगन होइ गाई॥१२॥

हरसों लगे रहो मोरे भाई० ॥टेक॥
ऐसे जतन करो मन मेरे, राम बिसरि जनि जाई॥
लागे ध्रुव प्रहलाद विभीषण, गनिका सदन कसाई॥
नामदेववर दास कबीरा, पीपा मीरा बाई॥
लंका लागे बङ्का लागे, लागै सैना नाई॥
कहा कहौं सेबरी की महिमा मोसे वरणि न जाई॥
निपट सनेह करो साधुन से छाँड़ि कपट चतुराई॥
दया धर्म हृदय में राखो सहज मिलैं रघुराई॥
जो हठ ध्यान धरत घट भीतर, और न आन उपाई॥
राम कृपा भज जानकिवल्लभ, तीनहुँ लोक बड़ाई॥१३॥

अब तो राम भजन कर भाई, अं० ॥टेक॥
घड़ी घड़ियाल बाजि रहे बाजा, पहर पहर सहनाई॥
राम भजन बिन बृथा जात है काल निशान बजाई॥
जाकी आशा करत हो आगे, मनुष देह नर पाई॥
करनी तो कछु बनि नहिं आवै अब कर भजन सवाई॥
जो यह अवसर चूके पामर, फिरिकै नहीं भलाई॥
लख चौरासी योनि के माहीं, भटकत ही मर जाई॥
बिन हरिभजन भला नहिं तेरा, सत्य कहौं मैं राम दुहाई॥
रामहिं राम रटो निशिवासर अतिशय प्रीति लगाई॥
नानकदास राम भजु भाई, हितचित से लौ लाई॥
ऐसे संत पुकार कहत हैं दोऊ भुजा उठाई॥१४॥

राम नाम निसतारै जब तब॥टेक॥
साठ घड़ी में एक घड़ी भज, सोइ सकल अघ जारै॥
काशीपुरी बसत गौरीपति, निशिदिन नाम उचारैं॥

कीटपतंग सुनत गति पावै, रघुकुल यश बिस्तारै॥
अजामेल गणिका गृहवासी, सुतहित नाम उचारैं॥
गज औ गिद्ध तरे हरि सुमिरत महिमा व्यास बिचारैं॥
परम पुनीत राम रघुवर को, हरि जन हरिरस गावैं॥
नामदेव सोइ संत शिरोमणि, चितसों क्षण न बिसारैं॥१५॥
ऐसी भक्ति मोहिं भावै ऊधोजी० ॥टेक॥
सरबस त्याग मगन होइ नाचै, जन्म कर्म गुण गावै॥
कथनी कथै निरन्तर मेरी चरणकमल चित लावै॥
मुख मुरली नयनन जल, धारा कर से ताल बजावै॥
जहँ जहँ चरण देत जन मेरो, सकल तिरथ चलि आवैं॥
उनके पदरज अंग लगावैं, कोटि जन्म सुख पावैं॥
उन मूरति मो हृदय बसतु है, मेरी सुरति लगावै॥
बलि बलि जाऊँ श्री मुख बानी, सूरदास बलि जावै॥१६॥

श्रीराम चालीसा

श्री रघुवीर भक्त हितकारी, सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी।
निशि दिन ध्यान धरै जो कोई, ता सम भक्त और नहिं होई।
ध्यान धरे शिवजी मन माहीं, ब्रह्मा इन्द्र पार नहिं पाहीं।
जय जय जय रघुनाथ कृपाला, सदा करो सन्तन प्रतिपाला।
दूत तुम्हार वीर हनुमाना, जासु प्रभाव तिहूँ पुर जाना।
तव भुज दण्ड प्रचण्ड कृपाला, रावण मारि सुरन प्रतिपाला।
तुम अनाथ के नाथ गोसाईं, दीनन के हो सदा सहाई।
ब्रह्मादिक तव पार न पावैं, सदा ईश तुम्हरो यश गावैं।
चारिउ वेद भरत हैं साखी, तुम भक्तन की लज्जा राखी।
गुण गावत शारद मन माहीं, सुरपति ताको पार न पाहीं।

नाम तुम्हार लेत जो कोई, ता सम धन्य और नहिं होई।
राम नाम है अपरम्पारा, चारिउ वेदन जाहि पुकारा।
गणपति नाम तुम्हारो लीन्हौ, तिनको प्रथम पूज्य तुम कीन्हौ।
शेष रटत नित नाम तुम्हारा, महि को भार शीश पर धारा।
फूल समान रहत सो भारा, पाव न कोउ तुम्हारो पारा।
भरत नाम तुम्हरो उर धारो, तासों कबहु न रण में हारो।
नाम शत्रुहन हदय प्रकाशा, सुमिरत होत शत्रु कर नाशा।
लषन तुम्हारे आज्ञाकारी, सदा करत सन्तन रखवारी।
ताते रण जीते नहिं कोई, युद्ध जुरे यमहूं किन होई।
महालक्ष्मी धर अवतारा, सब विधि करत पाप को छारा।
सीता नाम पुनीता गायो, भुवनेश्वरी प्रभाव दिखायो।
घट सों प्रकट भई सो आई, जाको देखत चन्द्र लजाई।
सो तुमरे नित पाँव पलोटत, नवों निद्धि चरणन में लोटत।
सिद्धि अठारह मंगलकारी, सो तुम पर जावै बलिहारी।
औरहु जो अनेक प्रभुताई, सो सीतापति तुमहिं बनाई।
इच्छा ते कोटिन संसारा, रचत न लागत पल की वारा।
जो तुम्हरे चरणन चित लावै, ताकी मुक्ति अवसि हो जावै।
जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरूपा, निर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनूपा।
सत्य सत्य सत्य ब्रत स्वामी, सत्य सनातन अन्तर्यामी।
सत्य भजन तुम्हरो जो गावै, सो निश्चय चारों फल पावै।
सत्य शपथ गौरिपति कीन्हीं, तुमने भक्तिहिं सब सिद्धि दीन्हीं।
सुनहु राम तुम तात हमारे, तुमहिं भरत कुल पूज्य प्रचारे।
तुमहिं देव कुल देव हमारे, तुम गुरुदेव प्राण के प्यारे।
जो कुछ हो सो तुम ही राजा, जय जय जय प्रभु राखो लाजा।
राम आत्मा पोषण हारे, जय जय जय दशरथ दुलारे।

ज्ञान हृदय दो ज्ञान स्वरूपा, नमो नमो जय जगपति भूपा।
धन्य धन्य तुम धन्य प्रतापा, नाम तुम्हारा हरत संतापा।
सत्य शुद्ध देवन मुख गाया, बजी दुन्दुभी शंख बजाया।
सत्य सत्य तुम सत्य सनातन, तुम ही हो हमारे तन मन धन।
याको पाठ करे जो कोई, ज्ञान प्रकट ताके उर होई।
आवागमन मिटै तिहि केरा, सत्य वचन माने शिव मेरा।
और आस मन में जो होई, मनवांछित फल पावे सोई।
तीनहूँ काल ध्यान जो ल्यावैं, तुलसी दल अरु फूल चढ़ावैं।
साग पत्र सो भोग लगावैं, सो नर सकल सिद्धता पावैं।
अन्त समय रघुवर पुर जाई, जहां जन्म हरि भक्त कहाई।
श्री हरिदास कहै अरु गावै, सो बैकुण्ठ धाम को जावै।
दोहा—सात दिवस जो नेम कर, पाठ करे चित लाय।
हरिदास हरि कृपा से, अवसि भक्ति को पाय॥
राम चालीसा जो पढ़े, राम चरण चित लाय।
जो इच्छा मन में करै, सकल सिद्ध हो जाय॥

आरती श्री रघुवर जी की

आरती कीजै श्री रघुवर जी की, सत् चित् आनन्द शिव सुन्दर की।
दशरथ तनय कौशल्या नन्दन, सुर मुनि रक्षक दैत्य निकन्दन।
अनुगत भक्त भक्त उर चन्दन, मर्यादा पुरुषोत्तम वर की।
निर्गुण सगुण अनूप रूप निधि, सकल लोक वन्दित विभिन्न विधि।
हरण शोक-भय दायक नव निधि, माया रहित दिव्य नर वर की।
जानकी पति सुर अधिपति जगपति, अखिल लोक पालक त्रिलोक गति।
विश्व वन्द्य अवन्ह अमित गति, एक मात्र गति सचराचर की।
शरणागत वत्सल व्रतधारी, भक्त कल्प तरुवर असुरारी।
नाम लेत जग पावनकारी, वानर सखा दीन दुख हर की।

श्री राम कवचम्

श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥पार्वत्युवाच ॥

भगवन्सर्व देवेशसर्व देवनमस्कृतः।
सर्वं में कथितं देव राममन्त्रो विशेषतः॥१॥
त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं पूर्वसूचितम्।
कथयस्व महादेव यद्यहं तव वल्लभा॥२॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु वक्ष्यामि देविशि! कवचं परमाद्भुतम्।
अत्यन्त गोपनं गुह्यं सर्व मन्त्रौध विग्रहम॥३॥

विनियोग-

ॐ अस्य श्रीराम त्रैलोक्यमोहन कवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दः श्रीरामचन्द्रो देवता-मम चतुर्वर्गसाधने जपे विनियोगः।

॥अथ कवचम्॥

प्रणवो मे शिरः पातु तारको ब्रह्मरूपकः
अनन्तोऽग्न्यासनः सेन्दुर्नासामेकाक्षरोऽवतु॥१॥
रां रामाय नम इति षड्वर्णो भुक्तिमुक्तिदः।
भालंपाया नेत्रयुग्मं रामोद्व्क्षरसंज्ञकः॥२॥
क्लीं मे पायाच्छ्रोत्र युग्ममेकाक्षरश्च मोहनः।
क्लीं रामाय नम इति मुखं मे परिरक्षतु॥३॥
रां रामचन्द्राय स्वाहा अष्टार्णो मे भुजद्वयम्।
श्रीरामाय नम इति स्कन्धौ पातु खरान्तकः॥४॥

श्रीरामचन्द्राय रक्षोघ्नाय नम इति द्वादशाक्षरः।
हृदयं मे सदा पातु रघुवंशसमुद्भवः॥५॥
ह्रीं रामचन्द्राय नम इति पातु मे उरु युग्मकम्।
श्रीरामभद्राय स्वाहा नाभिमष्टाक्षरोऽवतु॥६॥
क्लीं रामभद्राय सीतायाः पतये नमः।
सक्थिनी सततं पातु राक्षसेन्द्र विमर्दकः॥७॥
प्रणवो रामचन्द्राय हृदित्यष्टाक्षरोऽवतु।
जानुनी मे सदापातु रक्षःकुल विनाशकः॥८॥
प्रणवो रामभद्राय द्विठान्तोऽष्टाक्षरोऽवतु।
पाद युग्मं सदा पातु वानरेन्द्र श्रियः प्रदः॥९॥
ह्रीं सीतापतये नमः प्राच्यां मां सर्वदाऽवतु।
ह्रीं जानकीवल्लभाय पातु याम्ये सदा प्रभुः॥१०॥
क्लीं जानकीनाथायेति प्रतीच्यां मां सदाऽवतु।
श्रीरघुनाथाय नमः कौबेर्य्यां दिशि रक्षतु॥११॥
ह्रुं जानकीवल्लभाय स्वाहग्न्येय्यां सदाऽवतु।
ॐ ह्रीं भरताग्रजायरामाय क्लीं
स्वाहेति पातु-मां नैर्ऋत्यां सदाप्रभुः॥१२॥
ॐ रां श्रीं जानकीवल्लभाय
स्वाहेति वायव्ये मां सर्वदाऽवतु।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं दाशरथये नम
इति ईशाने मां सर्वदाऽवतु॥१३॥
ॐ नमोभगवते ब्रूयाच्चतुर्थ्यां रघुनन्दनम्।
रक्षोघ्नविशदायेति मधुरादि समीरयेत्॥१४॥

प्रसन्नवदनायेति पश्चादमित तेजसे।
बलायपश्चाद्रामाय विष्णवे तदनन्तरम्॥१५॥
प्रणवादिनमोन्तं च मालामन्त्रमुदीरयेत्।
राजस्थाने सदा पातु रघुवंश समुद्भवः॥१६॥
ॐ नमोभगवते ब्रूयाद् रामाय तदनन्तरम्।
महापुरुषाय प्राच्य पश्चान्नम उदीरयेत्॥१७॥
इत्यष्टाक्षरोमन्त्रो मामेव सर्वदाऽवतु।
ध्यायेत्तु पुण्डरकाक्षं परंज्योतिः परात्परम्॥१८॥
राम एव परंब्रह्म सच्चिदानन्द लक्षणः।
इति ध्यात्वाजपेन्मत्रं भुक्तिमुक्ति प्रदायकम्॥१९॥

॥ अथ रामगायत्री ॥

ॐ दाशरथायविद्महे सीतावल्लभाय-
धीमहि तन्नोरामः प्रचोदयात्॥२०॥
इति श्रीरामगायत्री बीजमन्त्रप्रवर्द्धिनी।
गायत्री जपमात्रेण भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी॥२१॥
इति ते कथितं देवि सर्वमन्त्रौध विग्रहम्।
त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम्॥२२॥
प्रातःकाले पठेद्यस्तु सोभीष्टं फलमाप्नुयात्।
पूजाकालेपठेद्यस्तु कवचं साधकोत्तमः॥२३॥
कीर्तिश्रीकान्तिमेधायुर्बृंहितो भवति ध्रुवम्।
राममन्त्रमयंब्रह्म कवचं मन्मुखोदितम्॥२४॥
गुरुमभ्यर्च्च विधिवत् कवचं हि पठेत्ततः।

द्वि सकृद्वा यथान्यायं सोऽपिपुण्यवतांवरः॥२५॥
देवमभ्यर्च्यविधिवत् पुरश्चर्य्यां समाचरेत्।
अष्टोत्तरशतंजप्त्वा दशांशं हवनादिकम्॥२६॥
ततस्तु सिद्धिकवचः सर्वकार्य्याणि साधयेत्।
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरश्चर्य्याविना ततः॥२७॥
गद्यपद्यमयीवाणी तस्यवक्त्रात्प्रवर्तते।
वक्त्रे तस्य वसेद्वाणी कमला निश्चलागृहे॥२८॥
पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत्।
अपविर्शसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात्॥२९॥
विलिख्य भूर्जपत्रेण स्वर्णस्थं धारयेद्यदि।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ सकुर्य्याद्दासवजजगत्॥३०॥
त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव त्रैलोक्य विजयी भवेत्।
तद्गात्रंप्राप्य शस्त्राणि ब्रह्मास्त्रादीनियानि च॥३१॥
माल्यानिकुसुमानीव सुखदानि भवन्ति हि।
स्पर्द्धामुद्धूय भवने लक्ष्मीर्वाणी मुखे वसेत्॥३२॥
इदंकवचमज्ञात्वा यो जपेद्राममन्त्रकम्।
शतलक्षप्रजप्तोऽपि न मन्त्रः सिद्धिदायकः॥३३॥
सशस्त्राघातमाप्नोति सोचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।
सम्यग्ज्ञात्वा तु कवचं मन्त्रःस्याच्छीघ्र सिद्धिदः॥३४॥

॥इति श्रीब्रह्मयामलेतन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे राम कवचं समाप्तम्॥